मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित

हिन्दी दैनिक

उत्तरशक्ति

हर खबर निष्पक्षता के साथ

मुंबई
वर्षः 7 अंक 275
रविवार, 27 अप्रैल 2025
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

पीएम मोदी ने 51 हजार से अधिक युवाओं को सौंपे नियुक्ति पत्र

नई दिल्ली, 26 अप्रैल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि भारतीय युवाओं की समावेशिता देश में उनके विकास का एक महत्वपूर्ण कारक है। वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से एक सभा को संबोधित करते हुए, जहां उन्होंने रोजगार मेले के तहत विभिन्न सरकारी विभागों में नियुक्त 51,000 से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए, प्रधानमंत्री मोदी ने देश की आर्थिक व्यवस्था और आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने, आधुनिक बुनियादी ढांचे के निर्माण और मजदूरों के जीवन को बेहतर बनाने में युवाओं की जिम्मेदारी पर प्रकाश डाला।

मोदी ने नवनियुक्त युवाओं से विकसित भारत बनने की दिशा में भारत की प्रगति का समर्थन करने के लिए ईमानदारी से काम करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि आज केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में 51 हजार से अधिक युवाओं को पक्की सरकारी नौकरी के पत्र दिए गए हैं। आज भारत सरकार के अलग अलग विभागों में आप युवाओं के नए दायित्वों की शुरूआत हुई है। आपका दायित्व देश के आर्थिक तंत्र को मजबूत करना है, आपका दायित्व देश की आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करना है, आपका दायित्व देश में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण का है, आपका दायित्व श्रमिकों के जीवन में मूलभूत बदलाव लाने का है।

उन्होंने कहा कि जब युवा राष्ट्र के निर्माण में भागीदार होते हैं, तो राष्ट्र तेज विकास भी करता है और विश्व में अपनी पहचान भी बनाता है। भारत का युवा आज अपने परिश्रम और इनोवेशन से दुनिया को ये दिखा रहा है कि हममें कितना सामर्थ्य है। हमारी सरकार हर कदम पर ये सुनिश्चित कर रही है कि देश के युवाओं के लिए रोजगार-स्वरोजगार के अवसर बढ़ें। उन्होंने कहा कि इस बजट में सरकार ने मैन्युफैक्चरिंग मिशन की घोषणा की है। इसका उद्देश्य है- 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देना और भारत के युवाओं को ग्लोबल स्टैंडर्ड वाले प्रॉडक्ट बनाने का मौका देना। इससे ना केवल देश की लाखों टरटए२ को...हमारे लघु उद्यमियों को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि पूरे देश में रोजगार के नए अवसर भी खुलेंगे।

मोदी ने कहा कि आज का ये समय भारत के युवाओं के लिए अभूतपूर्व अवसरों का समय है। हाल ही में आईएमएफ ने कहा है कि भारत, दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना रहेगा। उन्होंने कहा कि देश में युवाओं के लिए नए नए अवसर बन रहे हैं। कुछ ही दिन बाद मुंबई में हङ्ग१ 'ि अ४ङ्गि ३२४' & एल्ल३ी१ ३ंल्लीेल्ल३ र४े३ यानि, हअश्एर 2025 का आयोजन होने जा रहा है। इस आयोजन के केंद्र में भी देश के युवा हैं। देश के यंग क्रिएटर्स को पहली बार इस तरह का मंच मिल रहा है।

पहलगाम आतंकी हमले के जिम्मेदार लोगों को मुंहतोड़ जवाब देगा भारतः जे. पी. नड्डा

नई दिल्ली, 26 अप्रैल। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जे. पी. नड्डा ने शनिवार को कहा कि भारत पहलगाम आतंकी हमले के लिए जिम्मेदार लोगों को करारा जवाब देगा। इस सप्ताह की शुरूआत में हुए हमले में 26 लोगों की मौत गई थी।

श्रीमंत दगडूशेठ गणपति की पूजा-अर्चना करने के बाद यहां पत्रकारों के साथ बातचीत में नड्डा ने कहा कि पूरा देश उम्मीद करता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस हमले का कड़ा जवाब देंगे।

हाल के वर्षों में कश्मीर में हुए सबसे घातक आतंकवादी हमलों में से एक में पहलगाम के लोकप्रिय बैसरन मैदान में आतंकवादियों द्वारा पर्यटकों पर की गई गोलीबारी में कम से कम 26 लोग मारे गए थे।

केंद्रीय मंत्री ने कहा, मैं यहां गणपति बप्पा का आशीर्वाद लेने आया हूं।

जिस तरह से जम्मू-कश्मीर में कायरतापूर्ण हमला हुआ, उससे पूरा देश गुस्से में है और उन्हें उम्मीद है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस हमले का कड़ा जवाब देंगे।

उन्होंने कहा कि वह आशीर्वाद मांगते हैं कि देश स्थिति का मजबूती से सामना करे और हमले के लिए जिम्मेदार लोगों को करारा जवाब दे। नड्डा ने कहा, मुझे विश्वास है कि गणेशजी के आशीर्वाद से देश इस कठिन समय से गुजर जाएगा और प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में जिम्मेदार लोगों को करारा जवाब दिया जाएगा।

आतंकवाद और अराजकता का समाज में कोई स्थान नहीं: योगी

लखनऊ, 26 अप्रैल। जीरो टॉलरेंस नीति की पुष्टि करते हुए, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को पहलगाम आतंकी हमले पर दुख व्यक्त किया और कहा कि 'ये नया भारत किसी को छेड़ता नहीं, लेकिन अगर कोई छेड़ेगा तो उसको छोड़ेगा भी नहीं।' लखीमपुर खीरी में जनता को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि आतंकवाद और अराजकता का समाज में कोई स्थान नहीं है। सीएम योगी ने कहा कि मैं उन परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। हमारे समाज में आतंकवाद या अराजकता के लिए कोई जगह नहीं हो सकती।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत सरकार का सुरक्षा, सेवा और सुशासन का मॉडल विकास पर आधारित है। यह गरीबों के कल्याण और सभी की सुरक्षा पर आधारित है। हालांकि, अगर कोई सुरक्षा में सेंध लगाने की हिम्मत करता है, तो न्यू इंडिया जीरो टॉलरेंस की अपनी नीति का पालन करते हुए, उसे उसकी समझ में आने वाली भाषा में जवाब देने के लिए तैयार है। यह नया भारत किसी को छेड़ता नहीं है लेकिन अगर कोई छेड़ेगा तो उसको छोड़ेगा भी नहीं। इससे पहले दिन में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने लखीमपुर खीरी में शारदा नदी के तटीकरण कार्य का निरीक्षण किया। 24 अप्रैल को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कानपुर के शुभम द्विवेदी के परिवार से मुलाकात की, जो हमले में अपनी जान गंवाने वाले 26 निर्दोष पीड़ितों में से एक था। अपनी निंदा व्यक्त करते हुए आदित्यनाथ ने हमले को कायरतापूर्ण कृत्य करार दिया और इस बात पर जोर दिया कि भारत में ऐसी घटनाओं को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सीएम योगी ने कहा, 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था, जिसमें कानपुर का एक व्यक्ति मारा गया था। शुभम द्विवेदी की दो महीने पहले ही शादी हुई थी और वह वहां आतंकी हमले में मारा गया। यह आतंकियों द्वारा किया गया बहुत ही कायराना हमला है और यह दशार्ता है कि आतंकवाद अपनी अंतिम सांसों पर है। भारत जैसे देश में इस तरह की घटना स्वीकार्य नहीं है। केंद्र सरकार की कार्रवाई आतंकवाद के ताबूत में आखिरी कील ठोकने वाली है।₹ उन्होंने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पहले ही हमले से प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण कर चुके हैं और आतंकवाद के मुद्दे से निपटने के लिए आगे भी कदम उठाए जाएंगे।

चावल मिल में धुएं के कारण दम घुटने से पांच मजदूरों की मौत

बहराइच। उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में दरगाह थाना क्षेत्र स्थित एक चावल मिल में धुएं के कारण दम घुटने से शुक्रवार की सुबह पांच मजदूरों की मौत हो गयी तथा तीन अन्य मजदूर अस्पताल में भर्ती हैं। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया। चावल मिल प्रबंधन ने मृतक श्रमिकों के परिवार के सदस्यों को 10-10 लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की है।

जिलाधिकारी मोनिका रानी ने बताया कि मजदूर धान सुखा रहे थे, तभी ड्रायर से अचानक धुआं उठने लगा, जिससे उनका दम घुटने लगा और पांच मजदूरों की मौत हो गई।

अपर पुलिस अधीक्षक (नगर) रामानंद प्रसाद कुशवाहा ने शुक्रवार को बताया कि प्रारंभिक सूचना के अनुसार, राजगढ़िया चावल मिल के ड्रायर में नमी आने के कारण धुआं उठने पर कुछ मजदूर निरीक्षण करने वहां पहुंचे लेकिन धुआं इतना अधिक था कि वे वहीं बेहोश हो गये। उन्होंने बताया कि अग्निशमन के दल ने वहां पहुंचकर मजदूरों को बाहर निकाला।

कुशवाहा ने बताया कि मजदूरों को जिला अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने पांच मजदूरों को मृत घोषित कर दिया जबकि तीन अन्य का इलाज किया जा रहा है। जिला चिकित्सालय के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक (सीएमएस) डॉ. एमएम त्रिपाठी ने बताया कि अस्पताल में पांच लोग मृत अवस्था में लाये गये, जबकि तीन का इलाज जारी है।

राजगढ़िया राइस मिल के निदेशक विनोद अग्रवाल ने बताया, चावल मिल में लगा ड्रायर धान की नमी को सुखाने के काम आता है। यह बड़ा और ऊंचा तथा पूर्णतः स्वचालित संयंत्र है, जिसमें किसी व्यक्ति को जाने की आवश्यकता नहीं होती। गैस और आग का भी वहां कोई इस्तेमाल नहीं होता, भाप से हवा गर्म कर धान की नमी को निकाला जाता है।

उन्होंने कहा कि मशीन में कभी धुंआ नहीं होता, लेकिन आज सुबह करीब 5-6 बजे किसी मजदूर ने ड्रायर में संभवतः धुंआ देखा। उनके अनुसार, अभी यह नहीं पता चला है कि धुंआ कैसे उठा। अग्रवाल ने बताया कि कर्मचारियों से जानकारी मिली है धुंआ देखकर एक मजदूर ने मशीन बंद की और जांच करने के लिए मशीन के अंदर चला गया। पहला मजदूर जब वापस नहीं लौटा तो एक-एक करके आठ मजदूर ड्रायर में गये और बेहोश हो गये। मिल में मौजूद कर्मियों ने तुरंत दमकल को बुलाया और बेहोश मजदूरों को बाहर निकाल कर अस्पताल भिजवाया गया। चावल मिल ने पांच मृतक श्रमिकों के आश्रितों को 10-10 लाख रुपये और तीन घायल श्रमिकों को 50-50 हजार रुपये की वित्तीय सहायता देने की घोषणा की है। सीएमएस त्रिपाठी ने बताया कि मृतकों की पहचान राजेश कुमार (26), बबलू प्रजापति (28) और गफ्फार (22) के रूप में हुई है। ये तीनों कन्नौज जिले के रहने वाले हैं, जबकि एक मृतक जहूर (60) श्रावस्ती और दूसरा बिट्टू शाह (30) बिहार के मधेपुरा का निवासी था। त्रिपाठी के अनुसार, घायलों की पहचान बहराइच निवासी सुरेंद्र (40), श्रावस्ती निवासी देवी प्रसाद (25) श्रावस्ती और पंजाब के तरनतारन निवासी सुखदेव (30) के रूप में की गई है। जिला प्रशासन ने घटना की जांच के लिए एक संयुक्त जांच दल का गठन किया है। जिलाधिकारी ने बताया कि संयुक्त जांच दल में मुख्य अग्निशमन अधिकारी (सीएफओ), सहायक श्रम आयुक्त (एएलसी), जिला उद्योग केंद्र के महाप्रबंधक (जीएम डीआईसी) और तकनीकी विशेषज्ञ शामिल किये गये हैं।

एक राष्ट्र एक चुनाव से विकास को पंख लगेंगे: शिवराज सिंह चौहान

नई दिल्ली। चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक राष्ट्र एक चुनाव का जो सपना देखा है, उसे हम सब को मिल कर साकार करना है। एक बयान के मुताबिक गांधी भवन प्रेक्षागृह में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा, एक राष्ट्र एक चुनाव, देश की आवश्यकता है। साल के 12 महीने चुनाव होते रहते हैं। हर प्रदेश के मुख्यमंत्री व मंत्री चुनाव प्रचार करते हैं, इससे विकास कार्य थम जाते हैं। हर महीने आचार संहिता लगने से जनकल्याणकारी योजनाएं भी प्रभावित होती हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने इस योजना पर काम करना शुरू किया था। अब समय आ गया है कि हम सभी उनके इस सपने को साकार करें।

इससे पूर्व कार्यक्रम संयोजक एवं उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि एक राष्ट्र एक चुनाव, देश के लिए बहुत आवश्यक है। एक राष्ट्र एक चुनाव कराने से न केवल देश पर चुनाव कराने का आर्थिक बोझ कम होगा, बल्कि जब एक साथ चुनाव होंगे तो नवगठित सरकार को पांच वर्ष तक निरंतर विकास कार्य करने का पर्याप्त समय मिलेगा।

उप मुख्यमंत्री ने पहलगाम हमले में मारे गए सभी नागरिकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने हुए कहा कि इस घटना को अंजाम देने वाले आतंकियों एवं उनके आकाओं को कतई बख्शा नहीं जाएगा। उनके खिलाफ हमारी सेनाएं लगातार कार्रवाई कर रही हैं। इस अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने कहा कि एक राष्ट्र एक चुनाव देश के लिए बहुत जरूरी है। लगातार चुनाव चलते हैं, इससे देश के संसाधनों और समय की हानि होती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) रंगनाथ पाण्डेय ने की। उन्होंने कहा कि आचार संहिता से विकास की गति भी प्रभावित होती है। एक राष्ट्र एक चुनाव देश की जरूरत है। हम सभी को इस अभियान की महत्ता समझनी चाहिए।

केरल के कई होटलों को मिली बम से उड़ाने की धमकी, पुलिस ने जारी किया अलर्ट

केरल। केरल के कई होटलों में शनिवार को बम की धमकी ईमेल के जरिए मिली, जिसके बाद पुलिस ने बम निरोधक इकाइयों और डॉग स्क्वॉड को तैनात कर जांच की। कैंटोनमेंट पुलिस स्टेशन के एक अधिकारी ने बताया कि जिन होटलों में बम की धमकी मिली थी, उन सभी की जांच की जा रही है। उन्होंने कहा कि अभी तक कुछ नहीं मिला है। जांच जारी है। अधिकारी ने कहा कि पुलिस धमकी भरे ईमेल की उत्पत्ति की भी जांच कर रही है, जिसमें दावा किया गया था कि तिरुवनंतपुरम शहर के मध्य में स्थित हिल्टन होटल सहित राज्य की राजधानी के विभिन्न होटलों में आईईडी विस्फोट होंगे। हाल के महीनों में, जिला कलेक्टरों, केरल भर में राजस्व प्रभागीय अधिकारियों के कार्यालयों और हाल ही में केरल उच्च न्यायालय को निशाना बनाकर ईमेल के माध्यम से इसी तरह की बम धमकियाँ प्राप्त हुई हैं।

हिन्दी विरोध की संकीर्ण राजनीति के दंश

-ललित गर्ग

हिंदी को लेकर तमिलनाडु की राजनीति का आक्रामक होना कोई नयी बात नहीं है लेकिन तमिलनाडु के बाद महाराष्ट्र में हिंदी का विरोध यही बताता है कि संकीर्ण राजनीतिक कारणों से किस तरह भाषा को हथियार बनाया जा रहा है। विभिन्न राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी एवं केन्द्र सरकार को घेरने के लिये जिस तरह भाषा, धर्म एवं जातियता को लेकर आक्रामक रवैया अपनाते हुए देश में अशांति, अराजकता एवं नफरत को फैला रहे रहे हैं, यह चिन्ताजनक है। महाराष्ट्र में हिन्दी का विरोध आश्चर्यकारी है। हिन्दी दुनिया का तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिन्दी विदेशों में सम्मान पा रहे हैं और अपने ही देश में उपेक्षा एवं विवाद का शिकार बन रही है। महाराष्ट्र और अन्य गैर हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी की स्वीकार्यता इसलिए बढ़ रही है, क्योंकि उसकी उपयोगिता सिद्ध हो रही है। हिंदी का मराठी या अन्य किसी भाषा से कोई झगड़ा नहीं। क्या यह विचित्र नहीं कि हिंदी का विरोध उस महाराष्ट्र में हो रहा है, जिसकी राजधानी हिंदी फिल्म उद्योग का गढ़ है? हिंदी फिल्म उद्योग ने मुंबई को न केवल प्रतिष्ठित किया है, बल्कि महाराष्ट्र के लोगों को लाभान्वित भी किया है। क्या राज ठाकरे, उद्धव ठाकरे आदि हिंदी फिल्म उद्योग का भी विरोध करेंगे? ऐसा करके वे अपने राज्य के लोगों के पैरों पर कुल्हाड़ी मारने का ही काम करेंगे। यह किसी से छिपा नहीं कि हिंदी विरोध के नाम पर लोगों की भावनाएं भड़काने का काम अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करने के लिए किया जाता है। यह और कुछ नहीं, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को कमजोर करने और लोगों में वैमनस्य पैदा करने वाली क्षुद्र राजनीति है।

त्रिभाषा फामूर्ले में केन्द्र सरकार चाहती है कि भारत में प्रत्येक छात्र को तीन भाषाएँ सीखनी चाहिए, जिनमें से दो मूल भारतीय भाषाएँ होनी चाहिए, जिसमें एक क्षेत्रीय भाषा शामिल होनी चाहिए और तीसरी अंग्रेजी होनी चाहिए। यह सूत्र सरकारी और निजी दोनों स्कूलों पर लागू होता है और शिक्षा का माध्यम तीनों भाषाओं में से कोई भी हो सकता है। नेशनल

एजुकेशन पॉलिसी के त्रिभाषा फामूर्ले के तहत मराठी और अंग्रेजी के साथ हिंदी को पढ़ाए जाने के महाराष्ट्र सरकार के निर्णय पर विपक्षी दलों की राजनीतिक आक्रामकता का कारण वोट की राजनीति एवं भाजपा के बढ़ते वर्चस्व को विराम लगाने की स्वार्थी मानसिकता है। त्रिभाषा फामूर्ले पर सबसे पहले महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के राज ठाकरे ने आपत्ति उठाई। यह वही राज ठाकरे हैं, जो हिन्दुत्व का झंडा हाथ में लेकर स्व-संस्कृति की वकालत करते रहे हैं। इस पर हैरानी नहीं कि उद्धव ठाकरे भी राज ठाकरे के सुर में सुर मिला रहे हैं। उनकी शिवसेना ने एक समय दक्षिण भारतीयों को मुंबई से भगाने का अभियान छेड़ा था, फिर उसके निशाने पर उत्तर भारतीय आ गए थे। हैरानी इस बात की है कि शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता भी त्रिभाषा फामूर्ले के तहत हिंदी पढ़ाए जाने का विरोध कर रहे हैं और इसके पीछे साजिश देख रहे हैं। अच्छा होता कि मराठी अस्मिता की रक्षा के बहाने हिंदी को निशाने पर ले रहे ये नेता यह बताते कि तीसरी भाषा के रूप में हिंदी का विरोध करने के क्या कारण है? केवल मोदी सरकार ने इसे प्रस्तुत किया है, इस कारण इसका विरोध मानसिक दिवालियापन का द्योतक है।

तीसरी भाषा के रूप में हिंदी का चयन इसलिए सर्वथा उपयुक्त है, क्योंकि एक तो वह आधिकारिक राजभाषा एवं सबसे प्रभावी संपर्क भाषा है और दूसरे, महाराष्ट्र में बड़ी संख्या में हिंदी बोलने-समझने वाले हैं। ये वे लोग हैं, जो काम-धंधे के सिलसिले में महाराष्ट्र गए और फिर वहीं बस गए। इन्होंने महाराष्ट्र के विकास में योगदान भी दिया है। इसकी अनदेखी करते हुए हिंदी का विरोध करना एक तरह का नस्लवाद ही है, एक तरह की संकीर्ण एवं स्वार्थी मानसिकता है। संचार और सूचना क्रांति तथा तेज आवागमन के चलते भाषायी स्तर पर तमिलनाडु एवं महाराष्ट्र आदि गैर हिन्दी भाषी राज्यों की स्थिति तीन-चार दशक पहले जैसी नहीं है। वहां हिंदी बोलने वालों की संख्या भले कम हो, पर उसे समझने और हिंदी में आने वाले सवालों का जवाब देने वालों की तादाद बढ़ी है। चाहे तमिलनाडु का निवासी हो या फिर महाराष्ट्र या फिर गैर हिन्दी भाषी राज्य का, उसके हाथ में यदि फोन है, उसमें इंटरनेट का कनेक्शन है, तो तय है कि उसकी अंगुलियों के नियंत्रण में हिंदी और अंग्रेजी ही नहीं, दुनियाभर की भाषाएं हैं, इसलिए हिंदी ही नहीं, किसी भी भाषा का विरोध अब दुनिया के किसी भी कोने में पूरी तरह न तो सफल हो सकता है और न ही कोई दीवार उसे रोक सकती है। फिर हिन्दी तो हिन्दुस्तान की अस्मिता एवं अस्तित्व से जुड़ी भाषा है। दुनिया में जहां कहीं भी लोग अन्यत्र जाकर बसते हैं, वे अपने साथ अपनी संस्कृति और भाषा भी ले जाते हैं। यदि कोई यह चाहता है कि ऐसा न हो तो ऐसा होने वाला नहीं है। महाराष्ट्र के विपक्षी दल इसका विरोध कर रहे हैं, तमिलनाडु में इसके रोकने के प्रयास हो रहे हैं, वहीं आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने एक अलग नजरिया दिया। उन्होंने हिंदी सहित कई भाषाओं की शिक्षा की वकालत की है। नायडू ने कहा कि भाषा केवल संचार का एक साधन है। आप सभी जानते हैं कि तेलुगु, कन्नड़, तमिल और अन्य भाषाएं विश्व स्तर पर चमक रही हैं। नॉलेज अलग है, भाषा अलग है। हिंदी भी देश में कम्युनिकेशन लैंग्वेज के तौर पर जरूरी है।

हिन्दी हमारी मातृभाषा के साथ-साथ राजभाषा होने के बावजूद उसको उचित सम्मान न मिलना या हिन्दी के नाम पर विध्वसंक राजनीति होना अनेक प्रश्नों को खड़ा करती है, सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा भी हिन्दी ही है। गूगल के अनुसार हिन्दी दुनिया की ऐसी भाषा है जिसमें सर्वाधिक कंटेंट (पाठ्य सामग्री) का निर्माण होता है। सर आइजेक पिटमैन ने कहा है कि संसार में यदि कोई सर्वांग पूर्ण लिपि है तो वह देवनागरी है। निश्चित ही सशक्त भारत-विकसित भारत निर्माण एवं प्रभावी शिक्षा के लिए हिन्दी में शिक्षा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। तथ्य यह भी है कि उत्तर भारत के अलावा देश के अन्य राज्यों से जो राजनेता प्रधानमंत्री बने, उन्होंने कभी हिंदी का विरोध नहीं किया। दक्षिण भारत से पहले प्रधानमंत्री बने पी वी नरसिंह राव धाराप्रवाह हिंदी बोलते थे। कर्नाटक के नेता एच.डी. देवेगौड़ा जब पीएम बने तो उन्होंने लालकिले से हिंदी में ही अपना भाषण दिया था। हिन्दी राष्ट्रीयता एवं राष्ट्र का प्रतीक है, उसकी उपेक्षा एक ऐसा प्रदूषण है, एक ऐसा अंधेरा है जिससे छांटने के लिये ईमानदार प्रयत्न करने होंगे। क्योंकि हिन्दी ही भारत को सामाजिक-राजनीतिक-भौगोलिक और भाषायिक दृष्टि से जोड़नेवाली भाषा है। हिंदी को दबाने की नहीं, ऊपर उठाने की आवश्यकता है। भारत की गरिमा एवं गौरव की प्रतीक राष्ट्र भाषा हिन्दी को हर कीमत पर विकसित करना हमारी प्राथमिकता होनी ही चाहिए।

आजादी के अमृतकाल तक पहुंचने के बावजूद हिन्दी को उसका उचित स्थान न मिलना विडम्बना एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। विश्व में हिन्दी की प्रतिष्ठा एवं प्रयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, लेकिन देश में उसकी उपेक्षा एवं राजनीतिक विरोध एक बड़ा प्रश्न है। राजनीति की दूषित एवं संकीर्ण-स्वार्थी सोच का परिणाम है कि हिन्दी को जो सम्मान मिलना चाहिए, वह स्थान एवं सम्मान राष्ट्र में हिन्दी को नहीं मिल रहा है। भारत सहित दुनिया के अनेक देशों में विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाने लगा क्योंकि भारत और अन्य देशों में 120 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। पाकिस्तान की तो अधिकांश आबादी हिंदी बोलती व समझती है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी लाखों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। फिजी, सुरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद जैसे देश तो हिंदी भाषियों द्वारा ही बसाए गये हैं। हिन्दी का हर दृष्टि से इतना महत्व होते हुए भी भारत में प्रत्येक स्तर पर इसकी इतनी उपेक्षा क्यों?

सावरकर के खिलाफ टिप्पणी पर राहुल को सुप्रीम फटकार

अशोक भाटिया

कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को वीर सावरकर पर की गई विवादित टिप्पणी के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने कड़ी फटकार लगानी पड़ीं है। अदालत ने राहुल गांधी से कहा कि उन्हें स्वतंत्रता सेनानियों का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए और यदि भविष्य में ऐसे बयान दिए गए तो अदालत इस पर संज्ञान लेगी। यह मामला राजनीतिक और कानूनी दृष्टि से महत्वपूर्ण बन चुका है, क्योंकि यह बयान न केवल राहुल गांधी के लिए बल्कि अन्य नेताओं के लिए भी एक चेतावनी बन सकता है।राहुल गांधी ने 17 दिसंबर 2022 को महाराष्ट्र के अकोला में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान वीर सावरकर पर एक विवादित टिप्पणी की थी। उन्होंने सावरकर को अंग्रेजों का नौकर और पेंशन लेने वाला बताया था। राहुल गांधी का यह बयान भारतीय राजनीति और इतिहास के संदर्भ में अत्यधिक संवेदनशील माना गया, क्योंकि वीर सावरकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख नेता थे। उनके योगदान को लेकर विभिन्न दृष्टिकोण रहे हैं, लेकिन राहुल गांधी का यह बयान आलोचनाओं के साथ-साथ कानूनी विवादों का कारण बना।

सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी के बयान पर सख्त नाराजगी जताई। अदालत ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों का अपमान करना बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। न्यायमूर्ति ने राहुल गांधी से कहा, आप एक जिम्मेदार राजनेता हैं, आपको इस प्रकार के गैर-जिम्मेदाराना बयान नहीं देने चाहिए। इसके साथ ही अदालत ने चेतावनी दी कि अगर भविष्य में इस प्रकार के बयान दिए गए, तो वह इस मामले पर गंभीरता से विचार करेगा और संज्ञान ले सकता है। सुनवाई के दौरान जस्टिस दीपांकर दत्ता ने यह भी कहा कि राहुल गांधी ने बिना इतिहास को पूरी तरह समझे ऐसा बयान दिया. उन्होंने कहा कि आप उन लोगों के बारे में कैसे ऐसा कह सकते हैं जिन्होंने देश को आजादी दिलाई? राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी अंग्रेज अधिकारियों को पत्र भेजते थे तो लिखते थे- योर फेथफुल सर्वेंट। तो क्या उसके चलते आप महात्मा गांधी को भी अंग्रेजों का नौकर कहेंगे। स्वतंत्रता सेनानियों का अपमान करना गलत है। बहुत समय से राहुल गाँधी और कॉन्ग्रेस पार्टी लगातार वीर विनायक दामोदर सावरकर का अपमान करने में लगी हुई रही है ।ह्वमैं माफी नहीं माँगूँगा, मैं सावरकर नहीं हूँह्व झ सावरकर मनुस्मृति को मानते थे तो संविधान के बिल्कुल उलट है। सावरकर को संविधान में भारतीयता भी नहीं दिखा था।राहुल गाँधी बार-बार ये डायलॉग बोलते रहे हैं और कॉन्ग्रेस पार्टी इसका वीडियो भी शेयर कर रही है। ये अलग बात है कि राफेल से लेकर ह्वमोदीह्व सरनेम वाले लोगों को गाली देने तक, राहुल गाँधी अदालतों में माफी माँगते रहे हैं। इतने चुनाव हारने के बावजूद बार-बार एक महान स्वतंत्रता सेनानी का अपमान किया जा रहा है।

राहुल दोहराते है कि मैं सावरकर नहीं हूं तो दरअसल में राहुल गाँधी सावरकर बन भी नहीं सकते। जब राहुल गाँधी के दादी के पिता जवाहरलाल नेहरू नहीं बन पाए, तो राहुल गाँधी क्या बनेंगे। जवाहरलाल नेहरू जब नाभा जेल में थे, तब उनके पिता ने न जाने कहाँ-कहाँ पैरवी कर के उन्हें 12 दिनों में ही निकलवा लिया था। जबकि, वीर सावरकर ने 11 वर्षों तक जेल भी नहीं, बल्कि उससे भी खौफनाक कालापानी की सजा भुगती। उनके भाई गणेश भी उसी जेल में थे, लेकिन दोनों की मुलाकात तक नहीं होती थी। भले ही आज सावरकर की देशभक्ति पर आज कांग्रेस के नेता राहुल गांधी सवाल उठाते रहे हैं लेकिन उनकी दादी इंदिरा गांधी ने आज से 42 साल पहले 20 मई 1980 को सावरकर को ?देश का महान सपूत? कहा था। तकरीबन दो साल पहले साल 2018 के अक्टूबर माह की बात है कि जब पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और भाजपा आईटी सेल के मुखिया अमित मालवीय वीर सावरकर और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से जुड़े एक मसले पर एकराय थी। अमित मालवीय ने एक ट्वीट किया था, जिसमें एक इमेज पोस्ट की गई थी। जिसमें इंदिरा गांधी और वीर सावरकर की तस्वीरें दिखाई दे रही हैं। इस इमेज में इंदिरा गांधी के वीर सावरकर के बारे में दिया गया बयान दिखाई दे रहा है। जिसमें इंदिरा गांधी ने कहा था कि सावरकर द्वारा ब्रिटिश सरकार की आज्ञा का उल्लंघन करने की हिम्मत करना हमारी आजादी की लड़ाई में अपना अलग ही स्थान रखता है। इस तस्वीर में एक और बात बताई गई कि इंदिरा गांधी ने महान स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर के योगदान को पहचाना था। उन्होंने साल 1970 में वीर सावरकर के सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया था। इसके साथ पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने सावरकर ट्रस्ट में अपने निजी खाते से 11,000 रुपए दान किए थे। इतना ही नहीं इंदिरा गांधी ने साल 1983 में फिल्म डिवीजन को आदेश दिया था कि वह ह्वमहान क्रांतिकारीह्व के जीवन पर एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाएं।'

राहुल को यह जान लेना चाहिए कि विचारों से असहमत होते हुए भी कांग्रेस ने अपने पूर्वजों को नमन करने के लिए भारत को पोर्ट ब्लेयर (अंडमान निकोबार) में उमड़ते देखा है । वीर सावरकर से राजनैतिक दल विरोध रख सकते हैं, लेकिन भारत की जनता नहीं। वह जनता सेल्युलर जेल के सामने हजारों की संख्या में सलाम करने के लिए जाती रहती हैं । उस हजारों की संख्या में पूर्व प्रधानमंत्री आदरणीय मनमोहन सिंह जी भी थे, जिन्होंने अंडमान निकोबार के हवाई अड्डे का नाम 2005 में वीर सावरकर कर दिया था।

सीधी बात है कि राहुल गाँधी, आप सावरकर बन भी नहीं सकते। भारत के सूचना आयुक्त उदय माहुरकर ने अपनी पुस्तक में बताया है कि कैसे कई स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर से प्रेरित थे। उन्होंने लिखा है कि कैसे वामपंथी बार-बार इस तथ्य को नजरअन्दाज करते हैं कि बलिदानी भगत सिंह वीर सावरकर की पुस्तक 1857 का स्वतंत्रता समर से प्रेरित थे। वीर सावरकर ने सन्-1952 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के साथ हुई अपनी एक 12 साल पुरानी मुलाकात का भी जिक्र किया था। नेताजी के बॉम्बे स्थित आवास पर हुई इस बैठक में सावरकर ने उन्हें एक महत्वपूर्ण सलाह दी थी। ये सलाह ये थी कि वैश्विक मंच पर दुश्मन के दुश्मन को दोस्त माना जाए और राष्ट्रमण्डली में कोई भी देश अस्थायी दुश्मन नहीं होता, बस राष्ट्रहित ही स्थायी है। इस मुलाकात के कुछ ही महीनों बाद नेताजी भारत छोड़ कर अंग्रेजों को चकमा देते हुए निकल गए।

सावरकर की सलाह का ही योगदान था कि सुभाष चंद्र बोस ने ह्वआजाद हिंद फौज (क्रअ)ह्व का पुनर्गठन किया और उसमें जान फूँकी। भगत सिंह के चाचा अजित सिंह भी अंग्रेजों की सेना में विद्रोह कराने के लिए वीर सावरकर की मदद कर रहे थे। खुद भगत सिंह ने लिखा था कि वीर सावरकर विश्व-बंधुत्व में यकीन रखने वाले बहादुर हैं। उन्होंने अपनी डायरियों में 6 बार वीर सावरकर की पुस्तक ह्वहिन्दूपदपादशाहीह्व से उद्धरण लिया है। इतिहासकारों के मुताबिक सरदार भगत सिंह वीर सावरकर की राष्ट्रभक्ति और स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका से किस कदर प्रभावित थे इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सरदार भगत सिंह ने वीर सावरकर द्वारा 1857 के स्?वतंत्रता संग्राम पर लिखी गयी किताब ह्व1857- इंडिपेंडेंस समर ह्व का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करवाया था और इसे अन्य क्रांतिकारियों को बांटा भी था।

भगत सिंह के सावरकर के प्रति क्या विचार थे इसका एक उदाहरण कलकत्ता से प्रकाशित होने वाली मतवाला मैगजीन में लिखे उनके लेख में मिलता है। जहाँ 15 नवंबर और 22 नवंबर 1924 को प्रकाशित अंक में सरदार भगत सिंह लिखते हैं कि विश्वप्रेमी वह वीर है जिसे भीषण विप्लववादी, कट्टर अराजकतावादी कहने में हम लोग तनिक भी लज्जा नहीं समझते झ वही वीर सावरकर। विश्वप्रेम की तरंग में आकर घास पर चलते-चलते रुक जाते कि कोमल घास पैरों तले मसली जाएगी। यह लेख सरदार भगत सिंह ने बलवंत सिंह के छद्म नाम से लिखा गया था।

वो कॉन्ग्रेस की ताकतें ही थीं, जिसने वीर सावरकर को महात्मा गाँधी की हत्या में फँसाने की साजिश रची। जबकि वीर सावरकर का स्पष्ट मानना था कि अराजकतावादी गतिविधियों का सहारा लेना विदेशी शत्रु के खिलाफ तो ठीक है, लेकिन अपने ही देश के लोगों के खिलाफ ये रास्ता नहीं आजमाया जा सकता। जिस राष्ट्र के लिए उन्होंने जीवन खपा दिया, उसी देश में उन्हें जेल में ठूँस दिया गया। पहले अंग्रेजों से यातनाएँ मिलीं, फिर नेहरू सरकार में प्रताड़ना।

वीर सावरकर इन चीजों से काफी टूट गए थे। उदय माहुरकर ने एक बार बड़ी बात लिखी है कि बाबासाहब भीमराव आंबेडकर ने सावरकर के वकील और ह्वहिन्दू महासभाह्व के नेता भपोतकर से दिल्ली में गुप्त मुलाकात कर के कहा था कि उन्हें लगता है कि सावरकर के खिलाफ केस कमजोर है और वो बरी होंगे। उन्होंने मजबूती से मुकदमा लड़ने को प्रेरित किया। आंबेडकर 2 बार अदालत में भी सुनवाई के दौरान पहुँचे, एक बार अपनी पत्नी के साथ।

अब बताइए, क्या राहुल गाँधी कभी वीर सावरकर बन सकते हैं? ऐसा व्यक्ति, जिनसे सुभाष चंद्र बोस सलाह लें। ऐसा व्यक्ति, जिनसे भगत सिंह प्रेरणा लें। ऐसा व्यक्ति, जिनकी सुनवाई में आंबेडकर अपनी पत्नी के साथ पहुँचें। एक ऐसे व्यक्ति, जिनके साथ महात्मा गाँधी वैचारिक बहस करते हों। एक ऐसे व्यक्ति, जिनसे जवाहरलाल नेहरू को प्रधानमंत्री रहते इतना डर लगता है कि उनकी पेंशन रोक देते हैं, उन्हें जेल में डाल दिया जाता है।ज्ञात हो कि चित्रगुप्त ने लाइफ ऑफ बैरिस्टर सावरकर नामक एक किताब लिखी थी, जिसे HRA के लोग पढ़ते थे। हमें ये भी विदित है कि किस तरह महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं ने राजगुरु, भगत सिंह और सुखदेव को बचाने की चेहता नहीं की। जब क्रूर अंग्रेजों ने इन तीनों वीरों को फाँसी पर लटका दिया, तब सावरकर के रत्नागिरी स्थित आवास पर युवा बलिदानियों की याद में काला झंडा लगाया गया था। इससे पहले एक भगवा झंडा उनके घर की पहचान हुआ करता था। वीर स्वरकार ने तीनों बलिदानियों के लिए एक कविता भी लिखी, जो महाराष्ट्र में काफी लोकप्रिय हुआ। 4 महीने बाद श्रद्धानन्द पत्रिका में उन्होंने एक लेख के जरिए इन बलिदानियों को याद किया।

आज अक्सर वीर सावरकर को मुस्लिमों से घृणा करने वाला बताया जाता है और कॉन्ग्रेस पार्टी को लगता है कि उन्हें गाली देकर पार्टी को मुस्लिमों के वोट मिल जाएँगे। सबसे बड़ी बात तो ये कि महाराष्ट्र में पार्टी की यूनिट ये सब बर्दाश्त करती है, चाटुकारिता के कारण कोई नेता आवाज नहीं उठाता। काकोरी प्रकरण में बलिदान हुए अशफाकुल्लाह खान की याद में भी वीर सावरकर ने एक लेख लिखा था। ऐसे वीर सावरकर पर राहुल गाँधी कीचड़ उछालते रहते हैं!

आसमान पर थूकने का परिणाम क्या होता है, ये राहुल गाँधी को मालूम होना चाहिए। राहुल गाँधी ये फिर कॉन्ग्रेस पार्टी के किसी नेता में इतनी हैसियत नहीं है कि वीर सावरकर की आलोचना कर सके। महात्मा गाँधी जैसी हस्ती के साथ उनका वाद-विवाद चलता था। अमर क्रांतिकारी उनसे प्रेरणा लेते थे। राहुल गाँधी वीर सावरकर की आलोचना कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का मजाक बना रहे हैं। सरे आम बलिदानियों का अपमान कर रहे हैं।

शराब से प्राप्त राजस्व के भरोसे एमपी मे जनकल्याण

-नरेंद्र तिवारी 'पत्रकार'

दुनियाँ के ज्ञानियों ने एक स्वर मे कहा है, पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये साधनों की पवित्रता का होना भी जरुरी है, जब एक राष्ट्र के किसी ह्रदय प्रदेश मे जनता के कल्याण की बात हो तो साधनों की पवित्रता का होना बेहद अत्यंत जरुरी हो जाता है। यहां हम मध्यप्रदेश की बात कर रहे है। जहां प्रदेश के मुखिया ने वर्ष 2025-26 की आबकारी नीति मे बदलाव करते हुए प्रदेश के 19 धार्मिक क्षेत्रों मे शराबबंदी का जनकल्याण कारी निर्णय लिया है। उनका यह कदम स्वागत योग्य है। हालांकि इस निर्णय से उज्जैन स्थित कालभैरव मंदिर भी प्रभावित हुआ जहां के बारे मे यह मान्यता है की कालभैरव को शराब प्रसाद के रूप मे चढ़ाई जाती है, शराब चढ़ाने की यह परम्परा अति प्राचीन है,जो उज्जैन के कालभैरव मंदिर मे बरसों से प्रचलित थी, इस हेतु प्रशासन द्वारा मंदिर प्रांगण मे शराब काउंटर स्थापित कर रखे थै,जो एमपी की नविन शराब नीति के तहत हटा लिये गए है।

मध्यप्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने 19 धार्मिक स्थलों पर शराबबंदी के निर्णय के दौरान कहा था की 'जनभावनाओं का ध्यान रखते हुए, धार्मिक स्थानों की पवित्र गरिमा को बनाए रखने के लिये, शराबबंदी का निर्णय लिया गया है।' सवाल यह उठता है की जनभावना का ख्याल महज 19 धार्मिक क्षेत्रों के लिये ही क्यों रखा गया.. ? यह नेक और जनहितकारी निर्णय सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के लिये क्यों नहीं लिया गया..? जबकि एमपी मे भाजपा सरकार के राज मे धर्म, कर्म और आस्था की ध्वजा चारो दिशाओं मे फहरा रही है। हर शहर, हर गाँव के नागरिक चाहते है की प्रदेश मे अधूरी नहीं पूर्ण शराबबंदी हो। इस सच्चाई से मुंह नहीं मोडा जा सकता है की शराब के अत्यधिक सेवन से नागरिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, शराब पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। अनेक विवादों मे शराब ने नकारात्मक भूमिका निभाई है, शराब समाज मे अशांति और विवादों का कारण मानी जाती रही है। अधिकांश सडक दुर्घटनाओं मे शराब पीना एक महत्वपूर्ण कारण माना गया है। यह तथ्य प्रमाणित और सच है की शराब से समाज को नुकसान पहुँचता है, नागरिक समाज मे अशांति फैलती है, शराब समाज के विकास मे बहुत बड़ी रूकावट है। किंतु मध्यप्रदेश सरकार गुजरात और बिहार की तर्ज पर पूर्ण शराबबंदी लागू कर पाने का साहस नहीं दिखा पा रही है, जिसका महत्वपूर्ण कारण शराब के ठेकों से प्रदेश को प्राप्त होने वाला राजस्व है। जो सरकार की महत्वपूर्ण जरूरत बन गया है, जिसके मोह मे फंसकर सरकार शराब के ठेकों से प्राप्त राजस्व से जनकल्याण कर विकास और जनहित का ढिढोरा पिट रही है।

जानकारी के मुताबिक मध्यप्रदेश के राजस्व मे शराब ठेकों से प्राप्त राजस्व का बड़ा योगदान है। शराब बिक्री राज्य के खजाने मे 15% का योगदान देती है, जो इसे गैर कर आय के सबसे बड़े स्त्रोत मे से एक बनाती है। सरकार को वर्ष 2023 मे शराब ठेकों से 13590 करोड़, वर्ष 2024-25 मे 16000 करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त हुआ था, वर्ष 2025-26 मे आबकारी विभाग का लक्ष्य 16500 करोड़ रु है, याने शराब के ठेकों से प्राप्त राजस्व राज्य सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के वित्त पोषण मे महत्व पूर्व भूमिका निभाता है। 19 धार्मिक महत्व के स्थानों मे शराबबंदी से राजस्व मे हुए घाटे को रोकने के लिये सरकार ने शराब की कीमतों मे वृद्धि का निर्णय लिया है। 1अप्रैल 2025 से एमपी मे लागू नवीन शराब नीति से महंगे हुए शराब ठेकों के बाद प्रदेशभर मे अवैध शराब के पकड़ाने, कीमतों मे हुई वृद्धि के परिणाम स्वरूप ग्राहक और दूकानदार के मध्य विवादों की खबरों से अखबार भरे पड़े है। प्रदेश मे अवैध शराब के पकड़ाने शराब दुकानों पर कीमत बढ़ने से हो रहे विवाद प्रतिदिन कहीं न कहीं सुनाई पड़ रहे है। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र अलीराजपुर मे कांग्रेस नेता महेश पटेल ने प्रदेश मे पूर्ण शराब बंदी की वकालत करते हुए सरकार पर आरोप लगाया की आबकारी विभाग और ठेकेदार की मिली भगत से ग्रामीण रास्तों से शराब गुजरात पहुंचाई जा रही है। उन्होंने कहा की एक ओर सरकार शराबबंदी के प्रयास कर रही है, दूसरी ओर ठेकेदार ओर विभाग की मिली भगत से अवैध शराब का कारोबार चल रहा है। इसी प्रकार का आरोप आदिवासी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष, विधायक विक्रांत भूरिया ने मध्यप्रदेश के भोपाल स्थित प्रदेश कांग्रेस कार्यालय मे आयोजित पत्रकार वार्ता मे प्रदेश सरकार पर यह आरोप लगाया की आदिवासी क्षेत्रों को शराब का गढ़ बना दिया है, पुरे प्रदेश को शराब के नशे मे डूबाकर हमारी पीड़ियों को बर्बाद किया जा रहा है। उन्होंने धार कलेक्टर के उस पत्र का भी जिक्र किया जिसमे नकली होलोग्राम से शराब का कारोबार होने, पकड़ाए जाने पर वाहन के चालक पर कार्यवाही किये जाने और शराब के मालिक पर कोई एक्शन नहीं लिये जाने की बात कही। यह तथ्य भी जगजाहिर है, एमपी मे जिन 19 स्थानों पर शराब प्रतिबंधित की गयी है वहां शराब का अवैध कारोबार फलने-फूलने लगा है। खासकर आदिवासी और सीमावर्ती क्षेत्रों मे देखा गया है की दुकानों का मूल्य करोडो रुपया है, किंतु काउंटर पर शराब की उतनी बिक्री नहीं है। यह स्थिति शराब की अवैध तस्करी का उदाहरण है। यह भी देखने मे आता है की शराब ठेकों की शराब अधिकृत काउंटर से कम सड़क किनारे स्थित ढाबो, गाँव की दुकानों मे खुलेआम बिकती नजर आ रही है। शराब के ठेकों मे नेताओं, माफियाओं और धन्ना सेठों की संलिप्तता से इंकार नहीं किया जा सकता है, पुलिस और आबकारी विभाग भी इस गठजोड़ मे शामिल दिखाई देता है। इस गठजोड़ के परिणामस्वरूप एमपी के बड़े शहरों, नगरों एवं गाँवो मे अवैध शराब का गौरख धंधा फल फूल रहा है। अभी एक माह भी नहीं हुआ शराबबंदी वाले धार्मिक स्थलों पर अवैध रूप से शराब की उपलब्धता आसान हो गयी है। शराब धंधे से जुड़े लोगो का मानना है की शराबबंदी से अवैध शराब का कारोबार फलने-फूलने लगा है। अप्रेल 2025 से नई शराब नीति के लागू होने के बाद से प्रदेश भर मे विवादों की खबरों का आना मध्य प्रदेश सरकार की नवीन शराब नीति को सन्देश के कठघरे मे खड़ा करता है। दिल्ली की पूर्व सरकार की शराब नीति से उपजा विवाद अभी न्यायालय मे चल ही रहा है। ऐसे मे एमपी की नवीन शराब नीति मे भी शराब के अवैध कारोबारियों को लाभ पहुंचाने की मंशा साफ दिखाई देती है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा जिन स्थानों पर शराबबंदी की है, वहां अवैध शराब कारोबारियों पर सख़्ती की जाना चाहिए, सरकार द्वारा एमपी मे की गयी आंशिक शराबबंदी का निर्णय तारीफेकाबिल है, किंतु मध्यप्रदेश मे पूर्ण शराबबंदी मोहन सरकार को करना चाहिए। शराबबंदी के साथ ही शराब के अवैध कारोबार की कमर भी तोडना होंगी। शराब नागरिक समाज के सेहत के लिये नुकसानदायी है, शराब विवादों की जड़ है, इस पर पूर्ण सख़्ती की आवश्यकता है। अपने सख्त एवं दृढ फैसलों के लिये पहिचान रखने वाली मोहन सरकार जिसका परिवहन चैक पोस्ट बंद करने का निर्णय भष्ट्राचार को खत्म करने का जनहितैषी फैसला मना जा रहा है। एमपी मे पूर्ण शराबबंदी का निर्णय जिस दिन सरकार लेगी, मुख्यमंत्री सहित सम्पूर्ण सरकार की तारीफ प्रदेश की जनता मुक्तकंठ से प्रदेश की जनता करेंगी। फिलहाल तो एमपी की सरकार शराब से प्राप्त राजस्व के भरोसे जानकल्याण की उम्मीद लिये बैठी है। संत, महात्माओं और विद्वानों का साफ कहना है, अच्छे लक्ष्य के लिये साधनों की पवित्रता का होना बेहद जरुरी है।

नष्ट होती पृथ्वी को बचाएं: पेड़ जीव जंतुओं का संरक्षण आवश्यक

संजीव ठाकुर

जब हम अपने विकास का इतिहास देखते हैं तो ब्रिटिश सत्ता के दौरान हमारे संसाधनों का प्रकृति का अंधाधुंध दोहन होता रहा है। आजादी हमें मिली है यानी कि मानव को परंतु प्रकृति आजादी से अछूती रही है। अमूमन हमारी जरूरत रोटी, कपड़ा, मकान और जल की थी कि हमको उद्योग धंधे का विकास तीव्र गति से करना पड़ा। मशीनें जीती बड़ी से बड़ी होती गई आदमी उतना ही बौना होता गया। कृषि में नई नई तकनीक ट्रैक्टर, रसायनिक उर्वरक, कीटनाशकों के प्रयोग से भूमि बंजर होकर कराहने लगी। विकास का सही मायने माननीय शक्तियों के साथ ऊर्जा और उसकी शक्ति तथा सामर्थ्य का सही उपयोग ही होगा। जब से हमने विकास के पथ पर उड़ान भरी है उद्योगों की चिमनी यों को ऊपर उठाया मोबाइल क्रांति का बटन दबाया ई-मेल पर सवार होकर विश्व संदेश को सुना तब से हमारे झरनों का कल कल स्वर और संगीत बंद हो गया, पक्षियों का कलरव बंद हो गया पक्षी अब चीत्कार कर रहे हैं।

नदी नाले सूखकर मृतप्राय हो गए हैं। समुद्र की लहरों की झंकार विलुप्त हो गई है और पानी खारा और खारा हो गया है। अब हमें यह सोचना है कि विकास के नाम पर हमें ग्रीन इंडिया चाहिए या इंटरनेट की सवारी कर डिजिटल इंडिया चाहिए। बच्चों की झोली में इंटरनेट को डालकर डिजिटल जेनरेशन का सपना देखना चाहिए या प्रकृति की गोद में सुगंधित वायु की लहरों में खो जाना चाहिए। झरनों में बैठकर नौका विहार का आनंद लेना चाहिए या कंप्यूटर में बैठकर नेट खोल कर नन्हे मुन्ने की आंखों पर जोर डालकर उन्हें चश्मा वाला बनाना चाहिए। हरा भरा हिंदुस्तान यानी कि ग्रीन इंडिया और डिजिटल इंडिया का सपना नदी के दो कभी ना मिलने वाले किनारे हैं। विकास के नाम पर असीमित उद्योग धंधों की बाढ़ आ गई है। भूमि समाप्त हो रही है साथ ही हमारी वायु विषैली हो गई है। रात में शहरी मकानों मैं बिजली के झालरों के सामने आकाश में रात्रि के तारों की चमक फीकी पड़ गई है। जंगलों को हम ऐसे साफ करते गए जैसे सड़क पर रोड रोलर चला रहे हैं। नगर बने ,महानगर बने ,मकान बने किंतु अब घर गायब होते गए, हमें तब सुध आई जब चिड़िया चुग गई खेत, हमें विकास के नाम पर मानव सभ्यता से जुड़ी जमीन पानी, हरियाली,पक्षी जानवर सब चाहिए केवल अंधाधुन्ध कंक्रीट का विकास या इंटरनेट की रफ्तार नहीं चाहिए। इसके लिए हमें संसाधनों के अंधाधुंध प्रयोग पर अंकुश लगाना होगा। संसाधनों का इस्तेमाल अतिरेक में नहीं होना चाहिए । महात्मा गांधी ने खुद कहा है कि पृथ्वी पर सभी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधन है, किंतु मानव की लालच को पूरा करने का कोई साधन नहीं है। हम प्राकृतिक परियोजना तथा परिस्थितिकी की परियोजनाओं का स्वागत करना होगा सम्मान करना होगा। हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सौर, पवन, बायोगैस, ज्वार तरंग लहरों को ऊर्जा का आधार बनाना होगा।

भारत में परिस्थितियां बड़ी विषम है एक तरफ सोडियम लाइट से नहाती दिल्ली ,मुंबई ,बेंगलुरु की रंगीन सड़कें हैं, ऊंची ऊंची इमारतें हैं, तेज गति की मेट्रो है,वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का लुफ्त उठाते हुए युवक युवतियां है, दूसरी तरफ पसीने से भीगा हुआ किसान हैं। कैरोसिन की चिमनी में बच्चों को कहानी सुनाती माताएं हैं। यानी कि इतनी डिजिटल विषम बताएं भारत के अलावा विश्व के किसी भी कोने में नहीं है। भारत में विकास के नाम पर डिजिटलाइजेशन करने की आवश्यकता जरूर है पर गांव जंगलों नदियों और प्राकृतिक संसाधनों के निरस्तीकरण और विनाश की कीमत पर नहीं। हमें यह साबित करना होगा कि भारत के विकास की हरित क्रांति के साथ-साथ डिजिटल इंडिया भी विकास की गति को बढ़ा रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत कि हरित क्रांति का विकास ही डिजिटल इंडिया का स्वप्न को भी पूरा करेगा। इसके लिए स्वच्छ साफ-सुथरे संसाधन जैसे जल, खनिज, यूरेनियम ,थोरियम नहीं होगा तब तक नाभिकीय रिएक्टर की भट्टीयां कैसे चलेंगी। किसी कवि ने कहा है,

जो घर बनाओ तो एक पेड़ भी लगा लेना,
पंछी सारे उपवन के चहचहा उठेंगे।

विकास का जो भी रास्ता या नक्शा हम तैयार करेंगे निश्चित तौर पर वह मार्ग हरित क्रांति या हरित विकास से होकर गुजरेगा, जिससे हम अपनी 141 करोड़ जनसंख्या को स्वच्छ वातावरण दे पाएंगे और एक नए भारत की कल्पना को साकार कर पाएंगे।

पद्मानगर भाजी मार्केट में आतंकवादी हमले के विरोध में पाकिस्तानी झंडा और पुतला जलाकर किया गया विरोध प्रदर्शन

आचार्य सूरजपाल यादव/भिवंडी(उत्तरशक्ति)। पाकिस्तानी आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटन के लिए आए हिंदू पर्यटकों पर कायराना हमला कर निर्दोष नागरिकों की हत्या कर दी है । इस हमले की पूरी दुनिया में निन्दा की जा रही है । भिवंडी शहर के पद्मानगर भाजी मार्केट में जहां पूरा हिंदू समुदाय मृत पर्यटकों को श्रद्धांजलि दे रहा था , वहीं उन्होंने पाकिस्तानी आतंकवादियों के खिलाफ विरोध में पाकिस्तानी झंडा और पाकिस्तानी पुतला जलाकर अपना आक्रोश व्यक्त किया । इस अवसर पर पूर्व नगरसेवक संतोष शेट्टी , सुमित पाटिल , निष्काम भैरी सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने उपस्थित होकर विरोध जताते हुये पाकिस्तान के खिलाफ जोरदार नारेबाजी कर अपना आक्रोश व्यक्त किया । पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की निंदा करते हुए नरेन्द्र मोदी और अमित शाह से जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ सख्त कदम उठाने और मुंहतोड़ जवाब देने की मांग की है ।

पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए आत्मसम्मान मंच का विजय संकल्प सिद्धि यज्ञ

मुंबई (उत्तरशक्ति)। पहलगाम में हुए आतंकी घटना को ध्यान मे रखते हुए आज मुंबई के घाटकोपर के असल्फा इलाके में आत्मसम्मान मंच की तरफ से ₹विजय संकल्प सिद्धि यज्ञ₹ का आयोजन किया गया। भारत सरकार को शक्ति मिले, आतंकियों और उनके आकाओं का नाश हो, पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया जाए इसके लिए इस यज्ञ का आयोजन किया गया है। आत्मसम्मान मंच के अध्यक्ष एडवोकेट नित्यानंद शर्मा ने कहां है कि इस वक्त पूरे देशवासी भारत सरकार के साथ है। सरकार को पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए। इस वक्त ₹बिनु भय होय न प्रीति ₹ यानी बिना डर के प्रीती नहीं होती इस बात को ध्यान में रखना चाहिए। साथ ही पूरे देश को विश्वास है कि ₹दो कौड़ी का पाकिस्तान, भारत दिखा देगा उसे उसका स्थान।₹ एडवोकेट पंकज मिश्रा ने कहा है कि ₹मुझे पूरा विश्वास है कि जल्द ही भारत के तरफ से पाकिस्तान के तबाही की खुशखबरी आएगी, भारत की जनता के आत्मसम्मान के लिए ये कार्य होना जरूरी है,₹ इस मौके पर पंडित शेषनारायण मिश्रा,राजेश तिवारी,एडवोकेट आशीष राय मौजूद थे।

टाइगर ग्रुप मुंबई अध्यक्ष संजय खंडागळे से मुलाकात

मुंबई (उत्तरशक्ति)। शनिवार आरपीआई (आठवले) व टाइगर ग्रुप मुंबई अध्यक्ष संजय खंडागळे (भाऊ) से एक खास मुलाकात उनके जनसंपर्क कार्यालय अंधेरी, मुंबई में शॉल और पुष्पगुच्छ देकर सत्कार किया गया इस मौके पर उत्तर शक्ति हिंदी दैनिक समाचार के संवाददाता सुखबिंदर सिंह, श्रद्धा गोरगे ज्योतिषी समाज सेविका, शिवसेना एकनाथ शिंदे गुट समर्थक और मुमताज शेख समाज सेविका भी उपस्थित रहे.

बोरीवली में प्रॉपर्टी प्रदर्शनी का पूर्व सांसद गोपाल शेट्टी ने किया उद्घाटन

बोरीवली, मुंबई (उत्तरशक्ति)। बोरीवली में 'प्रापर्टी प्रर्दशनी' का उद्घाटन उत्तर मुंबई के पूर्व सांसद गोपाल शेट्टी ने रिबिन काटकर किया। कोरा केन्द्र ग्राउंड, बोरीवली-पश्चिम में इस प्रॉपर्टी प्रदर्शनी का आयोजन मिड-डे के तत्वावधान में किया गया था । उद्घाटन के उपरांत जनसेवक गोपाल शेट्टी ने वहां उपस्थित गणमान्य नागरिकों को संबोधित भी किया। इस अवसर पर जनसेवक गोपाल शेट्टी के साथ बोरीवली के विधायक संजय उपाध्याय, पिनाकिन शाह, मुकेश शर्मा तथा डॉक्टर योगेश दुबे सहित अनेक प्रतिष्ठित मान्यवर उपस्थित थे।

पहलगाम आतंकी हमले के विरोध में बोईसर में विहिप, बजरंग दल का जोरदार प्रदर्शन

पालघर(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकी हमले में महाराष्ट्र प्रदेश के छह पर्यटकों सहित देश के कई निर्दोष पर्यटकों की दर्दनाक मौत ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। इस हृदयविदारक घटना के विरोध में पालघर जिले के बोईसर शहर अंतर्गत ओसवाल एम्पायर में स्थित पिंकी सिटी में शुक्रवार 25 अप्रैल 2025 को बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के कार्यकताओं ने जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान कार्यकताओं ने पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाए और पाकिस्तान का पुतला दहन कर अपना आक्रोश व्यक्त किया। इस मौके पर शहीद हुए पर्यटकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई और आतंकियों को शीघ्र पकड़कर कड़ी सजा देने की मांग की गई। विहिप व बजरंग दल के कार्यकताओं ने कहा कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद मानवता के खिलाफ है और निदोर्षों की हत्या एक जघन्य अपराध है। प्रदर्शनकारियों ने केंद्र सरकार से पाकिस्तान के खिलाफ कठोर कार्रवाई करने की भी मांग की।

विहिप व बजरंग दल द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा में भाजपा के वरिष्ठ नेता अशोक वडे, प्रशांत संखे, अंकुर राऊत, महेंद्र भोणे, आर.बी. सिंह, दुर्गेश सोलंकी, मुकेश राय, हिन्दू

पाकिस्तान का पुतला दहन कर जताया आक्रोश

जनजागृति संस्था के रवि सिंह,अमित बाबू, हिम्मत जैन, राष्ट्रीय हिंदू सेवा संघ के ललित माली, एस.एस तिवारी, समाजसेवी शोभनाथ त्रिपाठी, स्वामीनाथ पाण्डेय, दयाराम मिश्रा, सज्जन (लालाजी) गुप्ता, संजय सिंह, एस.एस. सिंह, प्रेम अग्रवाल, वंशी अग्रहरि, पालघर जिला राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के भानुदास जोगमार्ग, विनोद वाजपेयी, विहिप के मुकेश दुबे, श्रीपाद पाटील और काचू शेट्टी सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। इस आयोजन में विहिप कोंकण प्रांत के गोरक्षा प्रमुख चंदन सिंह, प्रखंड प्रमुख एस.पी. सिंह, जिला मंत्री जयेश घरत, बजरंग दल जिला प्रमुख कुंदन सिंह, प्रखंड प्रमुख राबिन सिंह समेत अन्य पदाधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम का सूत्र संचालन विहिप के प्रखंड मंत्री अरविंद सिंह ने किया।

पहलगाम आतंकी हमले में मारे गये पर्यटकों को धर्मराजा समाजसेवा संस्था द्वारा दी गयी श्रद्धांजलि

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। भिवंडी के अंजूरफाटा स्थित भगवान महावीर चौक पर जम्मू कश्मीर के पहलगाम बायसरन घाटी में आतंकवादियों के हमले में 26 पर्यटकों की जान चली गयी , धर्मराजा ग्रुप द्वारा श्रद्धांजलि देकर आतंकवादियों पर आक्रोश जताया । बतादें कि इस अवसर पर धर्मराजा ग्रुप के वरिष्ठ नगरसेवक निलेश चौधरी , नितेश एंकर , बादशाह भाई , पूर्व नगरसेवक सुरेश गडा , मनसुख मालदे , जवाहर महतो आदि के साथ असंख्य लोगों ने उपस्थित रहकर पुष्प अर्पण कर मोमबत्ती जलाकर अपनी संवेदना व्यक्त किये । वहीं निलेश चौधरी ने कहा कि आतंकवादियों को पनाह देने वाले पाकिस्तान पर प्रतिबंध लगाया जाये । श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित लोगों ने पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाये।

बजाज आलियान्ज जनरल इंश्योरेंस ने 'क्लाइमेटसेफ' पेश किया

मुंबई (उत्तरशक्ति)। भारत की प्रमुख निजी जनरल इंश्योरेंस कंपनियों में से एक बजाज आलियान्ज जनरल इंश्योरेंस ने 'क्लाइमेटसेफ' नामक एक नया बीमा प्रोडक्ट लॉन्च किया है। जलवायु परिवर्तन से जुड़ी घटनाओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए, यह प्रोडक्ट उन लोगों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है जो इसके प्रभावों से सबसे ज्यादा जद में आते हैं। यह बीमा विशेष रूप से खुदरा ग्राहकों, ऑफिस जाने वालों, ऑटो/टैक्सी चालकों, खुदरा दुकान मालिकों, डिलीवरी एजेंटों, घरेलू सेवा देने वाले प्रोफेशनल, गिग वर्कर्स, घरों में रहने वालों और कार्यक्रमों में भाग लेने वालों की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया गया है,

जिन्हें ज्यादा गर्मी, ठंडी लहरों और भारी बारिश जैसी जलवायु घटनाओं के कारण इनकम में कमी या खर्चों में वृद्धि का सामना करना पड़ता है। क्लाइमेटसेफ इंश्योरेंस में उन स्थितियों को कवर किया गया है जिनमें अत्यधिक गर्मी के कारण बढ़े हुए बिजली बिल, यात्रा में अप्रत्याशित खर्च, खराब मौसम के कारण ग्राहकों की संख्या में कमी से बिक्री में गिरावट, बाढ़ के कारण सप्लाई चेन में देरी, लंबे समय तक बारिश से होने वाले रिसाव, भारी बारिश के कारण दुर्घटनाएं, गंभीर मौसम के कारण डेली वेज वर्कर्स के इनकम में नुकसान, बाढ़ और गर्मी की लहरों से घरेलू सामानों की क्षति, और खराब मौसम के कारण प्रोग्राम का कैन्सल हो जाना शामिल हैं। क्लाइमेटसेफ एक नया और आसान बीमा प्रोडक्ट है, जिसे ग्राहक साल में कई बार खरीद सकते हैं। इसमें क्लेम बिना किसी ज्यादा सूचना और कम से कम डॉक्युमेंट्स के साथ ऑटोमैटिक सात दिनों के भीतर निपटा दिए जाते हैं। यह बीमा प्रोडक्ट वास्तविक समय के मौसम डेटा के आधार पर प्रीमियम और कवरेज प्रदान करता है। ग्राहक अपनी सुविधा के अनुसार जोखिम स्थान, जोखिम अवधि (1 दिन से 30 दिन तक), मौसम जोखिम (अत्यधिक बारिश, कम तापमान, उच्च तापमान) और बीमित राशि का चयन कर सकते हैं। यह बीमा कवर बजाज आलियान्ज जनरल इंश्योरेंस की वेबसाइट,'Caringly Yours' मोबाइल ऐप, और उनके अन्य डिस्ट्रिब्यूशन चैनलों से खरीदा जा सकता है।

क्लाइमेटसेफ की घोषणा पर बोलते हुए बजाज आलियान्ज जनरल इंश्योरेंस के प्रबंध निदेशक और सीईओ डॉ. तपन सिंघल ने कहा, जलवायु परिवर्तन से हर किसी का सामना होता राहत है। बेशक यह हमारे रोजमर्रा के जीवन को अक्सर मुश्किल भरे तरीकों से प्रभावित करता है।

पालघर में पहलगाम हमले के विरोध में मुस्लिम समाज ने किया जोरदार प्रदर्शन

पालघर(उत्तरशक्ति)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए कायराना आतंकी हमले के खिलाफ शुक्रवार को पालघर शहर में मुस्लिम समाज की ओर से जोरदार विरोध प्रदर्शन किया गया। जुम्मे की नमाज के बाद दोपहर 2 बजे जामा मस्जिद के बाहर यह विरोध कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग उपस्थित रहे। इस हमले को लेकर पूरे देश में आक्रोश की लहर दौड़ पड़ी है।

विभिन्न स्थानों पर विरोध जताया जा रहा है। उसी कड़ी में पालघर में भी मुस्लिम समाज ने एकजुट होकर इस हमले की कड़ी निंदा की। प्रदर्शनकारियों ने हाथों में काली पट्टियाँ बाँधकर आतंकी हमले में मारे गए निर्दोष पर्यटकों को श्रद्धांजलि दी और अपने दुख को प्रकट किया।

प्रदर्शन के दौरान 'पाकिस्तान मुदार्बाद', 'पाकिस्तान पर कार्रवाई करो', 'दोषियों को सजा दो' जैसे नारे लगाए गए।

साथ ही पाकिस्तान का राष्ट्रीय ध्वज फाड़कर उसे आग के हवाले किया गया। उपस्थित लोगों ने आतंकवाद का स्थायी समाधान निकालने और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

लब्बैक यूथ फोर्स के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष पद पर फहद रईस खान नियुक्त

पालघर (उत्तरशक्ति)। आतंकवाद और भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्षरत संगठन 'लब्बैक यूथ फोर्स' (पंजीकृत) ने फहद रईस खान को महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया है। संगठन के राष्ट्रीय महासचिव रफीक शब्बीर सैय्यद द्वारा जारी नियुक्ति पत्र में इस बात की पुष्टि की गई है।

ज्ञात हो कि नीति आयोग में पंजीकृत संगठन लब्बैक यूथ फोर्स का मुख्यालय पालघर जिले के पालघर शहर (पूर्व) के गांधी नगर में स्थित है। फहद रईस खान को संगठन के माध्यम से राज्य में बढ़ते आतंकवाद और भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के लिए प्रशासन और सरकार के सहयोग से कार्य करने की जिम्मेदारी दी गई है। इसके साथ ही,

उन्हें युवाओं को जागरूक करने और सूफी विचारधारा का प्रचार-प्रसार करने का निर्देश भी दिया गया है। संगठन 'अहले सुन्नत वल जमात, मसलक-ए-आला हजरत' के सिद्धांतों पर आधारित कार्यों को प्राथमिकता देगा। नियुक्ति पत्र में यह भी उल्लेख किया गया है कि फहद रईस खान को आगामी तीन महीनों के भीतर अपनी कार्यकारिणी समिति का गठन करना होगा। यदि संगठन का कोई सदस्य या पदाधिकारी किसी भी गैरकानूनी या अनैतिक गतिविधि में संलिप्त पाया जाता है, तो राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महासचिव या कार्यकारी राष्ट्रीय महासचिव की सहमति से तत्काल उसे संगठन से निष्कासित किया जायेगा।

संगठन द्वारा यह भी स्पष्ट किया गया है कि सभी सदस्यों, कार्यकताओं और पदाधिकारियों को अनुशासन, नियम और शर्तों का पालन करना अनिवार्य होगा। उल्लंघन की स्थिति में संगठन को संबंधित व्यक्ति के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का पूर्ण अधिकार होगा।

राहनाल ग्राम पंचायत अंतर्गत मुनीसूरत कंपाउंड में फर्नीचर गोदाम में लगी भीषण भीषण आग

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। भिवंडी से सटे राहनाल ग्राम पंचायत के मुनिसूरत कंपाउंड के पास स्वागत गोदाम कॉम्प्लेक्स में स्थित एक फर्नीचर गोदाम की इमारत में सुबह करीब 3.30 बजे भीषण आग लग गई । तीन मंजिला इमारत में बड़ी मात्रा में प्लाईवुड , रेगेजीन , फोम , केमिकल सोल्युशन भारी मात्रा में संग्रहित था । इसलिए आग धीरे-धीरे फैल गई और पूरी इमारत आग की लपटों में घिर गई । आग इतनी भीषण थी कि इसकी लपटें करीब दस किलोमीटर दूर से देखी जा सकती थीं । आग की सूचना मिलते ही चार दमकल गाड़ियां भिवंडी से दो, कल्याण और ठाणे से एक-एक आग बुझाने के लिए मौके पर पहुंचीं । आग से इमारत के 12 गोदाम प्रभावित हुए हैं और इमारत का अधिकांश हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया है । आग के डर से मजदूर पास के गोदाम से सामान सुरक्षित निकालने के लिए भागने लगे थे । जबकि पड़ोस की रहवासी भवन में रहने वाले सभी परिवार के सदस्य

अपना कीमती सामान लेकर बाहर निकल गए थे और सुरक्षित स्थान पर जाकर रुक गए थे । आग बुझाने के दौरान एक दमकलकर्मी हरिश्चंद्र वाघ घायल हो गया जिसका एक निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है । इस बीच अग्निशमन विभाग के अधिकारी राजेश पवार ने बताया कि आग पर काबू पाने में काफी समय लग सकता है क्योंकि आग बुझाने के लिए पानी की कमी है ।

ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल ने भारतीय विद्यार्थियों को यूनिवर्सिटी ऑफ रोहेम्पटन के जुलाई 2025 सत्र में आवेदन के लिए आमंत्रित किया

मुंबई। यूनिवर्सिटी ऑफ रोहेम्पटन, लंदन ने अपने प्रमुख अंतरराष्ट्रीय साझेदार ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल एजुकेशन सर्विसेज (ओआईईएस) के सहयोग से जुलाई 2025 सत्र के लिए स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू कर दी है। ओआईईएस, ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल एजुकेशन ग्रुप का हिस्सा है। इस विशेष सत्र में जिन प्रमुख पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं, उनमें एमबीए (अर्ली करियर एवं हेल्थकेयर मैनेजमेंट), एमएससी डाटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, डिजिटल मार्केटिंग, बैंकिंग एंड फाइनेंस तथा ग्लोबल लॉजिस्टिक्स शामिल हैं। ये पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को भविष्य की आवश्यक दक्षताओं से लैस करेंगे और उन्हें उद्योग से जोड़ने में मदद करेंगे।

दक्षिण-पश्चिम लंदन के 54 एकड़ में फैले खूबसूरत परिसर में स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ रोहेम्पटन, मध्य लंदन से मात्र 30 मिनट की दूरी पर है। यह शांत और सुरम्य शैक्षणिक वातावरण प्रदान करती है, जो राजधानी लंदन की व्यावसायिक हलचलों से भी सीधे जुड़ता है। आधुनिक सुविधाओं से युक्त परिसर में पारंपरिक ब्रिटिश स्थापत्य कला की छवि आज भी बनी हुई है, जो इसे अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श गंतव्य बनाता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ रोहेम्पटन दक्षिणी लंदन में 54 एकड़ के एक खूबसूरत उद्यान जैसे परिसर में स्थित है। यह मध्य लंदन से केवल 30 मिनट की दूरी पर है। यहाँ का शैक्षणिक परिवेश शांत है, जिसकी यूके की राजधानी के हलचल से भरे पेशेवर परिदृश्य तक पहुँच भी आसान है। आधुनिक कैम्पस में अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ पारंपरिक ब्रिटिश वास्तुशिल्प की सुंदरता को संरक्षित रखा गया है। ऐसे में यह अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिये एक आदर्श गंतव्य बन जाता है। जुलाई सत्र के लॉन्च पर ओआईईएस के प्रबंध निदेशक मोहित गंभीर ने कहा, यूनिवर्सिटी ऑफ रोहेम्पटन ने उद्योग से मजबूत जुड़ाव और छात्र-केन्द्रित दृष्टिकोण के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की मिसाल कायम की है। जो भारतीय विद्यार्थी अपनी अंतरराष्ट्रीय शिक्षा को गति देना चाहते हैं, उनके लिए जुलाई 2025 सत्र में लचीलापन, छात्रवृत्तियाँ और लंदन जैसे वैश्विक शहर के केंद्र में स्थित परिसर तक पहुँच जैसे कई अवसर हैं, जो उन्हें शिक्षा और करियर दोनों में मजबूती देंगे।

बिटिया आकृति का जन्मदिन बड़े धूमधाम से मनाया गया

नालासोपारा (उत्तरशक्ति)। नालासोपारा पूर्व 90 फीट रोड प्रगति नगर स्थित जीवदानी अपार्टमेंट दुसरा महला रुम नं 202 में आकृति विरेन्द्र त्रिपाठी उम्र 12 वर्ष पूर्ण होने पर जन्मदिन के अवसर पर रामचरितमानस मानस पाठ का पंचम सोपान सुन्दरकाण्ड पाठ बहुत ही सुंदर ढंग से संपन्न हुआ। बिटिया आकृति तिवारी के जन्मदिन के अवसर पर भजन कीर्तन का कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी कलाकारों का साथ मिला,भजन गायक सिंगर अच्छे पांडेय , पवन पांडेय , और अरुण दूबे , केशियो पे मानस गायक सत्येंद्र पांडेय , नालवादक विवेक उपाध्याय और पैड प्लेयर श्याम मिलन सहित सभी गायकों ने अपने मधुर आवाज से मन मुग्ध कर दिया। बिटिया आकृति को आशीर्वाद उनके पिता विरेन्द्र त्रिपाठी , मां निलम त्रिपाठी , काका खबरें आज तक के पत्रकार मुकेश त्रिपाठी , फूफा हरिकेश तिवारी, फूफा दैनिक उत्तर शक्ति समाचार पत्र के उपसंपादक प्रेम चंद मिश्रा, बुआ लीलावती मिश्रा, बुआ सुशीला तिवारी, दादी शैला जयप्रकाश त्रिपाठी, गायत्री तिवारी, रेखा तिवारी , प्रिया तिवारी, गांव से दादा रामचंद्र त्रिपाठी ने भी हार्दिक बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं भेजा है।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालय:
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

स्वामी: शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालय: मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

एम्बुलेंस पर पलटा गिट्टी से लदा ट्रक, गर्भवती सहित चार की मौत, दो घायल

सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस बचाव तथा राहत कार्य में जुटी

मिजार्पुर(उत्तरशक्ति)। सोनभद्र के लोढ़ी अस्पताल से शनिवार की सुबह गर्भवती महिला को एंबुलेंस से बनारस ले जाते समय रास्ते में अहरौरा वाराणसी शक्ति नगर मार्ग पर ओवर ब्रिज के पास गिट्टी लदा ट्रक एम्बुलेंस पर पलट गया। हादसे में एंबुलेंस सवार गर्भवती महिला समेत चार लोगों की मौत हो गई। दो लोग घायल हो गए। सोनभद्र के लोढ़ी अस्पताल से गर्भवती महिला को रेफर किया गया। गर्भवती महिला के परिवार के तीन सदस्य एंबुलेंस में बैठे थे। एंबुलेंस चालक अपने एक साथी के साथ सभी को लेकर बनारस अस्पताल जा रहा था। सोनभद्र के क्रेशर प्लांट से गिट्टी लोड कर वाराणसी की ओर तेज रफ्तार से जा रहा। ट्रक शनिवार की सुबह ओवर ब्रिज के पास अनियंत्रित एंबुलेंस के ऊपर पलट गया। लोग ट्रक पर लदे गिट्टी के नीचे मलबे में दब गए। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस बचाव तथा राहत कार्य में जुटी गई। जेसीबी तथा पोकलेन की मदद से मलबे के नीचे दबे लोगों को निकाला गया। हादसे में एंबुलेंस सवार गर्भवती महिला हीरावती देवी (25) निवासी कनहरा थाना ओबरा सोनभद्र, मालती देवी (40) निवासी जुगैल सोनभद्र, सूरज बली खरवार (27) निवासी कनहरा थाना ओबरा व रामू की मौत हो गई। कौशल कुमार खरवार उर्फ भाईलाल निवासी कनहरा थाना ओबरा सोनभद्र व भंडारी शर्मा निवासी संतनगर गुरमा थाना राबर्ट्सगंज घायल हैं। जिनका उपचार चल रहा है।

संदिग्ध परिस्थितियों में युवक का शव मिलने से सनसनी

गांव के बाहर नहर में युवक की मिली लाश, परिवार ने जताई हत्या की आशंका

डॉ.इम्तियाज अहमद

मानीकलाँ,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। खेतासराय स्थानीय थाना क्षेत्र के लखमापुर गांव के पास नहर में गांव के ही एक युवक की लाश मिलने से सनसनी फैल गई। शनिवार की अल सुबह लाश मिलने की सूचना पर ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। हत्या की आशंका जताते हुए मृतक के चाचा ने तहरीर दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।लखमापुर निवासी साहुल (24 वर्ष) पुत्र स्व.संतलाल यादव मुंबई में ट्रेलर चलाता था। लगभग तीन सप्ताह पहले मुंबई से घर आया था। शुक्रवार को गांव की दलित बस्ती में एक बारात आई थी। रात्रि लगभग आठ बजे घर से शादी में शामिल होने गया था। घर से थोड़ी दूरी पर नहर की पुलिया के नीचे साहुल की लाश मिली तो परिजनों में कोहराम मच गया। मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। मां दुर्गावती बेटे के शव से लिपटकर दहाड़े मारने लगी। मृतक की नाक से खून निकल रहा था। दाहिने आंख के ऊपर चोट के निशान देख चाचा नंदलाल यादव ने हत्या की आशंका जताई है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर जांच पड़ताल में जुट गई।

दो भाईयों में मृतक साहुल बड़ा था। छोटा भाई अंकित सूरत में रहता है। दोनों भाइयों में अभी किसी की शादी नहीं हुई है। थाना प्रभारी रामाश्रय राय ने हत्या की आशंका से इंकार किया है। उनका कहना है कि पुलिया से गिरने पर चोट आने से मौत हुई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत का कारण स्पष्ट हो पाएगा। तहरीर मिली है। जांच की जा रही है।

लोकतंत्र और अधिक सशक्त, व्यवस्थित और परिणामदायी बनेगा: अंजू पाठक

राज एजुकेशन सोसाइटी ने 'वन नेशन–वन इलेक्शन' विषय पर किया महिला संवाद

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। राज एजुकेशन सोसाइटी ने नगर के एक होटल में कार्यक्रम किया जहां महिलाओं के साथ मिलकर 'वन नेशन–वन इलेक्शन' विषय पर महिला संवाद किया गया। इस मौके पर उपस्थित महिलाओं ने अपने विचार साझा किये। इसी क्रम में अंजू पाठक ने कहा कि एक राष्ट्र एक चुनाव की अवधारणा भारत के लोकतंत्र को अधिक सशक्त व्यवस्थित और परिणामदायी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल हमारे राजनीतिक तंत्र को सरल और पारदर्शी बनायेगा, बल्कि इससे समय धन और संसाधनों की व्यापक बचत भी होगी। अनीता सेठ ने कहा कि मैं एक राष्ट्र एक चुनाव का समर्थन करती हूं। इससे वोटिंग पैटर्न का मुद्दा बदलेगा और स्थानीय पार्टी जो छुटपुट होती है, उनको नुकसान उठाना होगा।इसी क्रम में मीरा अग्रहरि ने एक राष्ट्रीय एक चुनाव का समर्थन करते हुये कहा कि चुनाव में आचार संहिता लग जाती है और यह परिणाम जारी होने तक लागू रहती है। इससे जो देश की विकास की परियोजनाएं लागू होती हैं, उनमें देरी होती है। ममता गुप्ता ने कहा कि मैं एक राष्ट्र एक चुनाव से सहमत हूं। छोटी-छोटी पार्टियां क्षेत्रीय मुद्दों को लेकर चुनाव लड़ती हैं। ऐसा होने से उनका अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। सोनी जायसवाल ने कहा कि चुनाव के दौरान अक्सर एजेंसी द्वारा काले धन को लेकर आरोप लगाते हैं। इस पर भी एक राष्ट्रीय एक चुनाव जरुरी है।वहीं मधुलिका जी ने कहा कि इससे केन्द्र में राजकोष की बचत होगी। जब आर्थिक बचत होगी तो उससे देश का विकास होगा। मंजू जायसवाल ने कहा कि एक राष्ट्र एक चुनाव के होने से जो हमारा अतिरिक्त धन बार-बार चुनाव के समय पर खर्च होता है, वह बचेगा। भारत एक विकासशील देश है। वह धन विकास के कार्यों पर लगाया जाएगा। ज्योति श्रीवास्तव ने कहा कि जब-जब चुनाव होता है तब–तब सभी लोगों को चुनाव के समय अन्य जगहों पर ड्यूटी पर लगा दिया जाता है जिससे हम महिलाओं को अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि हमें घर और नौकरी दोनों ही को लेकर साथ चलना पड़ता है। सरिता जी ने कहा इससे देश की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।अन्त में संस्था की प्रबंधक अंजू पाठक ने कहा कि एक राष्ट्र एक चुनाव देश के लोकतंत्र को सशक्त सुव्यवस्थित, परिणामदायक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न हमारे राजनीतिक तंत्र को सरल और पारदर्शी बनायेगा, बल्कि इससे समय, धन और संसाधनों की व्यापक बचत होगी। इस अवसर पर तमाम लाग उपस्थित रहे जहां संस्था प्रबंधक ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

राजकीय लीलावती नेत्र चिकित्सालय का जिलाधिकारी ने किया औचक निरीक्षण

स्वास्थ्य सुविधाओं का लिया जायजा, नेत्र चिकित्सकों के अनुपस्थित रहने पर जिलाधिकारी ने जताई नाराजगी

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चंद्र के द्वारा राजकीय लीलावती नेत्र चिकित्सालय का औचक निरीक्षण कर स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया गया।निरीक्षण के दौरान अस्पताल में नेत्र चिकित्सक मौके पर उपस्थित नहीं पाये गए।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 लक्ष्मी सिंह ने अवगत कराया कि उक्त चिकित्सकों की ड्यूटी पुलिस भर्ती परीक्षा में लगाई गयी है। जिस पर जिलाधिकारी ने कहा कि नेत्र चिकित्सकों की अनुपस्थिति में एक वैकल्पिक नेत्र चिकित्सक की ड्यूटी अस्पताल में लगाई जानी चाहिए थी। जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किया कि तत्काल सुनिश्चित करें कि नेत्र चिकित्सक नियमित रूप से समय से उपस्थित होकर मरीजों का इलाज करें। साथ ही उन्होंने निर्देशित किया कि नियमित रुप से अस्पताल में साफ सफाई कराना सुनिश्चित करें।इस दौरान जिलाधिकारी ने मौके पर उपस्थित चिकित्सालय में आये मरीजों राजकुमारी देवी, इंद्रावती, केशव विश्वकर्मा और पन्नालाल जो अपनी आंख के इलाज के लिए आए थे। उनसे संवाद किया तथा मुख्य चिकित्सा अधिकारी के वाहन से उपस्थित मरीजों को जिला अस्पताल भेज कर उनका समुचित इलाज कराये जाने हेतु निर्देशित किया। जिलाधिकारी की पहल पर मुख्य चिकित्साधिकारी के द्वारा उक्त मरीजो का तत्काल इलाज कराते हुए और उन्हें दवा दिलाकर जिलाधिकारी को भी अवगत करा दिया गया है।

जालसाजी के आरोप में जेल में बंद एक बंदी की मौत से जेल में मचा हड़कंप

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। जालसाजी करके दूसरे की जमीन बेचने के आरोप में जेल में बंद एक बन्दी की बीती रात संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। यह खबर मिलते ही जेल प्रशासन में हड़कंप मच गया।

मृतक को मछलीशहर कोतवाली पुलिस ने बीते 13 अप्रैल को गिरफ्तार करके जेल भेजा था। मछलीशहर कोतवाली थाना क्षेत्र के शादीगंज दक्षिणी निवासी कुलदीप मौर्या पुत्र रामखेलावन उम्र 55 वर्ष को धोखाधड़ी, बेईमानी समेत कई गंभीर धाराओं ने 13 अप्रैल को गिरफ्तार करके जेल भेजा था, शुक्रवार की देर रात उसकी तबियत बिगड़ गई, जेल प्रशासन उसे जिला अस्पताल ले गए जहां पर डाक्टरो ने मृत घोषित कर दिया। इस मामले में मछलीशहर के चेयरमैन संजय जायसवाल करीब तीन महीने से जेल की सलाखों के पीछे है। बीबी आरोप है कि मृतक कुलदीप ने कूटरचित दस्तावेज के सहारे दूसरे की जमीन को चेयरमैन संजय जायसवाल को बेच दिया था।

कोटे की दुकानों पर अप्रैल महीने के निशुल्क राशन वितरण की तिथि 28 अप्रैल तक बढ़ी

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिला पूर्ति अधिकारी ने बताया कि जनपद के अन्त्योदय एवं पात्र गृहस्थी कार्डधारकों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के सापेक्ष आवंटित खाद्यान्न का निःशुल्क वितरण तिथि 25 अप्रैल से विस्तारित करके अंतिम तिथि 28 अप्रैल कर दिया गया है। कतिपय जनपदों में कार्डधारकों/उपभोक्ताओं को खाद्यान्न शत प्रतिशत वितरण न होने के कारण माह अप्रैल 2025 के सापेक्ष उपरोक्त आवश्यक वस्तुओं के वितरण का कार्य 28 अप्रैल 2025 तक विस्तारित किये जाने का निर्णय उत्तर प्रदेश खाद्य एवं रसद विभाग द्वारा लिया गया है।जिला पूर्ति अधिकारी ने उन उपभोक्ताओं से आग्रह किया है जो लोग अभी तक राशन का उठान नहीं ले पाए हैं, वह विस्तारित तिथि तक अपना राशन अवश्य उठान कर लें।

शान्ति व्यवस्था के लिये शाहगंज पुलिस ने किया पैदल मार्च

शाहगंज,जौनपुर(उत्तरशक्ति)। स्थानीय क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखने एवं आमजन में सुरक्षा की भावना जागृत करने के उद्देश्य से पुलिस प्रशासन द्वारा शुक्रवार शाम को पैदल मार्च किया गया। यह अभियान पुलिस अधीक्षक डा. कौस्तुभ के निर्देशन तथा अपर पुलिस अधीक्षक नगर आयुष श्रीवास्तव एवं क्षेत्राधिकारी शाहगंज अजीत सिंह चौहान के पर्यवेक्षण में संपन्न हुआ। पैदल मार्च का नेतृत्व प्रभारी निरीक्षक दीपेंद्र सिंह ने किया।यह मार्च शाम 7 बजे से 9 बजे तक मिश्रित आबादी वाले क्षेत्रों कस्बा मेन रोड, जेसीज चौक,पुरानी बाजार ,घासमंडी चौराहा,सहित नगर के विभिन्न मुहल्लों में किया गया।मार्च के दौरान पुलिस बल ने लोगों से संवाद स्थापित कर उन्हें सतर्क एवं सहयोगी रहने की अपील की। साथ ही किसी भी प्रकार की अफवाहों से बचने और संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी तत्काल पुलिस को देने का संदेश भी दिया गया।

विशेष लोक अदालत में 7 मामलों का हुआ निस्तारण

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश तृतीय/सचिव पूर्णकालिक, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रशांत कुमार सिंह ने अवगत कराया है कि उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ एवं राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली व मा0 कार्यपालक अध्यक्ष, राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण के निदेर्शानुसार एवं अनिल कुमार वर्मा-प्रथम, जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जौनपुर के निर्देशन व प्रशांत कुमार सिंह, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश तृतीय/सचिव पूर्णकालिक, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जौनपुर की देख-रेख में विद्युत अधिनियम 2003 के अन्तर्गत प्री-लिटिगेशन स्तर पर शमनीय दाण्डिक मामलों के कुल 25 वाद एवं न्यायालयों में लम्बित शमनीय दाण्डिक वादों के 102 एवं लघु प्रकृति के आपराधिक वादों (Petty Offences) के 07 मामलों का निस्तारण विशेष लोक अदालत में किया गया।

तहसील अध्यक्ष घनश्याम जायसवाल ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए पर्यटकों को दी श्रद्धांजलि

सरकार से सख्त से सख्त कार्यवाही की मांग

केराकत,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मण्डल तहसील केराकत के अध्यक्ष घनश्याम जायसवाल नें पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए पर्यटकों की याद में गहरी संवेदना प्रकट करते हुए दी श्रंद्धाजलि। पहलगाम हमले में घायल हुए लोगों को अच्छे स्वास्थ्य और दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु ईश्वर से की प्रार्थना ।एवं सरकार से आतंकियों को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग की।

इस अवसर पर घनश्याम जायसवाल तहसील अध्यक्ष उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मण्डल तहसील केराकत ने कहा कि निदोर्षों को निशाना बनाना कायरता की पराकाष्ठा है। यह अमानवीय कृत्य घोर निंदनीय है। ईश्वर से मैं यही प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें। शोक संतप्त परिजनों को यह असीम पीड़ा सहन करने की शक्ति दें। मैं घनश्याम जायसवाल तहसील अध्यक्ष उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मण्डल तहसील केराकत का अध्यक्ष के साथ साथ मैं वरिष्ठ व्यापारी नेता होने के नाते मैं सरकार से यह मांग करता हूँ ।कि आतंकवादियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए। यह हमला मानवता पर प्रहार है। इस हमले नें पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। पूरा व्यापारी परिवार शोकाकुल परिजनों के साथ है। आतंकी हमला इंसानियत पर एक धब्बा है। बेगुनाह लोगों को जान से मार देना इतनी बड़ी दरिंदगी मानवता को शर्मसार करने वाली है जो कि बेहद दुखद। बेहद निंदनीय है।

दूल्हा बदल कर शादी करने का प्रयास, बैरंग लौटी बारात

जयमाल रस्म के समय लड़की वालों को हुआ शक

भदोही(उत्तरशक्ति)। सुरियावां नगर के अशोक नगर में जौनपुर से आई बारात में दूल्हा बदल जाने से बारात को बैरंग वापस लौटना पड़ा। जयमाल रस्म के समय लड़की वालों को शक हुआ तो उन्होंने शादी से साफ इंकार कर दिया। जिसके बाद दोनों पक्षों के बीच समझौते के बाद बारात को बैरंग वापस लौट गई। नगर के अशोक नगर निवासी एक व्यक्ति ने अपनी बेटी की शादी जौनपुर के महराजगंज निवासी अमर बहादुर मौर्य के बेटे अभिषेक मौर्य से तय की थी। शादी के पहले हुई रस्मों में लड़का नहीं आया था। लड़की वालों के पास केवल उसकी फोटो थी। बताया जा रहा है कि वधू पक्ष के लोगों के पूछने पर वर पक्ष के लोग लड़के के व्यस्त होने की बात कहकर टाल देते और बताते कि वह सीधे शादी में आएंगे। शुक्रवार को धूमधाम से बारात आई। दरवाजे पर जयमाल रस्म शुरू हुई। लड़की पक्ष के लोगों को लगा कि दूल्हा दूसरा है। इस पर उन लोगों ने फोटो से मिलान किया तो उनका शक यकीन में बदल गया। लोगों ने तत्काल रस्म को रोक दी और मान मनौव्वल का दौर शुरू हो गया। काफी देर के बाद भी लड़की पक्ष के लोग शादी को तैयार नहीं हुए। वे शादी की तैयारियों में खर्च हुए पैसे वापस मांगने लगे और रातभर लड़के पक्ष के लोगों को बैठाया रखा। सुबह दोनों पक्षों में आपसी सुलह-समझौता होने के बाद बारात बैरंग वापस लौट गई। मामला पुलिस तक नहीं पहुंचा।

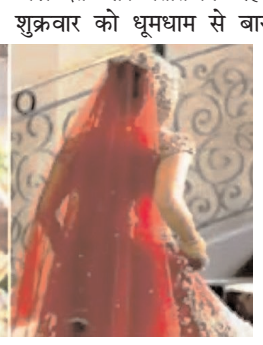

दिवार को तोड़ते हुए नीम के पेड़ से टकराया डम्फर, कई पुलिस के जवान बाल-बाल बचे

डॉ.एस.के.मिश्र

वाराणसी(उत्तरशक्ति)।जनपद के आदमपुर थानान्तर्गत शुक्रवार की देर रात राजघाट किला कोहना स्थित पुलिस बूथ के समीप डंपर ट्रक यूपी 64एटी 51 87 ने अनियंत्रित होकर चह दिवार को तोड़ते हुए नीम के पेड़ से जा टकराया। टक्कर इतना जोर था पेड़ की डाली टूट कर जमीन पर गिर पड़ा। जानकारों ने बताया काशी स्टेशन का नव निर्माण कार्य चल रहा था। न्यू स्टेशन बनाने के कार्य मे कई ट्रके और डम्फर गाड़ीया लगी हुई है।पुलिस बूथ के पास कई पुलिस कर्मी मौजूद थे। आंशिक रूप से सभी पुलिस कर्मी को चोट लगा। संयोग अच्छा था कि कोई पुलिस वाला गम्भीर रूप से घायल नहीं हुआ। सभी पुलिस के जवान बाल बाल बचे। आदमपुर पुलिस ने रेलवे के अधिकारियों को सूचना दिया सूचना मिलते मौके पर रेलवे के अधिकारिगण पहुंच कर जांच में जूटे वही यातायात सुचारू रूप से चालू कराने के लिए टूटे हुए नीम के डाल को हाईड्रोलिक मशीन से आदमपुर पुलिस हटवाया। रोड से पेड़ की डाली हटाने के आवागमन चालू हुआ।

कोतवाली चौराहे पर जाम का कारण बन रहे नाले के बाहर अतिक्रमण करने वाले दुकानदार

विशाल सोनी

शाहगंज,जौनपुर(उत्तरशक्ति)। पुलिस और प्रशासन के बार बार कड़ाई करती है तो यही दुकानदार गरीबी का हवाला देकर किसी न किसी नेता को लेकर प्रशासन पर दबाव डालने लगते है।अगर ये दुकानदार अपनी दुकानें नाले की हद के अंदर लगाए तो बहुत हद तक नगर के सबसे व्यस्तम इलाके कोतवाली चौराहा और घास मंडी चौराहे पर लगने वाले जाम से निजात मिल जाये।मगर यहां हालात बिल्कुल उलट है दुकान सहित ठेले खोमचे वाले भी अपनी दुकानें सड़क के पटरियों पर पूरी तरह कब्जा कर अपने दुकानों का सामान फैलाकर खुलेआम अतिक्रमण कर जाम को बढ़ावा देते है।पुलिस जब फटकारती है सामान हटा लेते है मगर फिर दूसरे दिन वही हाल हो जाता है।जो जाम का एक प्रमुख कारण बन जाता है।

इस सम्बंध डीएसपी अजीत सिंह चौहान से पूछने पर उन्होंने कहा की जाम से निजात के लिए हर प्रयास किये जा रहे है। हर चौराहों पर पुलिस की तैनाती रहती है।फिर अगर कहीं कोई दुकानदार अतिक्रमण कर जाम का कारण बन रहा है तो उचित कार्यवाई की जाएगी।

समझाने के की अपनी दुकानें नाले पर लगे पटिये के अंदर ही लगाए ।मगर फिर भी कुछ दुकानदार समझने को तैयार नही है। पुलिस करे भी तो क्या करे अगर जरा सा भी

पहलगाम आतंकी हमले के बाद वाराणसी पुलिस भी नहीं पीछे, 11 पाकिस्तानी नागरिकों को भेजा वापस

वाराणसी(उत्तरशक्ति)। जनपद में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पूरे देश में सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। इसी कड़ी में वाराणसी पुलिस भी एक्शन मोड में आ गई है। वाराणसी के पुलिस कमिश्नर मोहित अग्रवाल ने मीडिया से बातचीत में बताया कि जैसे ही पहलगाम हमले की जानकारी मिली, भारत सरकार के आदेशानुसार देशभर में पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा रद्द किए जाने की कार्रवाई शुरू कर दी गई थी।पुलिस कमिश्नर ने बताया कि वाराणसी में कुल 10 पाकिस्तानी नागरिक रह रहे थे।इनमें से अधिकांश लॉन्ग टर्म वीजा पर रह रहे थे, जबकि एक नागरिक शॉर्ट टर्म वीजा पर 45 दिन के लिए हाल ही में वाराणसी आया था। शासनादेश मिलते ही त्वरित कार्रवाई करते हुए सभी पाकिस्तानी नागरिकों को वाराणसी से बाहर भेज दिया गया। उन्हें बीती रात ट्रेन से दिल्ली रवाना किया गया, जहां से आगे अमृतसर होते हुए वाघा बॉर्डर पर भेजा जाएगा। कमिश्नर ने बताया कि इन नागरिकों के साथ एक पुलिसकर्मी भी सुरक्षा की दृष्टि से भेजा गया है।मोहित अग्रवाल ने कहा कि वाराणसी में अब किसी भी पाकिस्तानी नागरिक के अवैध रूप से रहने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इसके लिए सभी थानाध्यक्षों और एलआईयू (लोकल इंटेलिजेंस यूनिट) को सतर्क कर दिया गया है। शहर में यदि कोई भी विदेशी नागरिक, खासकर पाकिस्तानी या बांग्लादेशी, अवैध रूप से निवास करता पाया गया तो उसके खिलाफ तत्काल सख्त कार्रवाई की जाएगी।पुलिस कमिश्नर ने यह भी स्पष्ट किया कि सुरक्षा व्यवस्था को लेकर कोई ढिलाई नहीं बरती जाएगी। पुलिस प्रशासन लगातार पाकिस्तानी नागरिकों की गतिविधियों पर नजर बनाए हुए है। ऐसे किसी भी व्यक्ति की सूचना मिलते ही उसे चिन्हित कर कानूनी प्रक्रिया के तहत देश से बाहर भेजने का रास्ता दिखाया जायेगा।

आवश्यकता है

श्रीराम यादव बालिका महाविद्यालय प्रतापनगर बरंगी, शाहगंज, जौनपुर (उत्तर प्रदेश) सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर में स्ववित्त पोषित योजनान्तर्गत (01 प्राचार्य पद), हिन्दी (01), भूगोल (01), प्राचीन इतिहास (01), शिक्षा शास्त्र (01), गृह विज्ञान (01), समाज शास्त्र (01), उर्दू (01) पदों की आवश्यकता है। योग्यता एवं वेतनमान उत्तर प्रदेश शासन यू0जी0सी0 एवं विश्वविद्यालय परिनियमावली के अनुसार निर्धारित होंगे इच्छुक अभ्यर्थी अपने समस्त शैक्षिक अभिलेखों की सत्यापित प्रतियाँ, चार पासपोर्ट साइज फोटो, आधार कार्ड, पैन कार्ड एवं मोबाइल नम्बर के साथ के विज्ञापन प्रकाशन तिथि से 21 दिन के अन्दर प्रबंधक के पद नाम महाविद्यालय के पते पर आवेदन करें, साक्षात्कार की सूचना डाक अथवा दूरभाष के माध्यम से दी जाएगी।

प्रबंधक- सुरेन्द्र प्रताप यादव

मो0नं0 9956705411, 8009766617

युवक की हत्या कर नहर में फेंका मिला शव, फुफेरे भाई के साथ गया था बारात

हत्यारोपी को गिरफ्तार करने की मांग को लेकर ग्रामीणों ने किया चक्काजाम

वाराणसी(उत्तरशक्ति)। जिले के कपसेठी थाना क्षेत्र के पकड़ी बरछी गांव निवासी एक युवक की हत्या कर शव नहर में फेंकने का मामला सामने आया है। शनिवार सुबह दिलावलपुर गांव के समीप अनारकली विद्यालय के पास नहर से शव बरामद होते ही क्षेत्र में सनसनी फैल गई। युवक के सिर पर गंभीर चोट के निशान मिले। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। वहीं, आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क पर शव रखकर चक्काजाम कर दिया और आरोपियों की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की। पुलिस ने ग्रामीणों को समझाने का प्रयास किया और कार्रवाई का आश्वासन दिया। पुलिस ने मृतक के फुफेरे भाई और उसके एक दोस्तों को हिरासत में ले लिया है। घटनास्थल पर पुलिस पूछताछ कर रही है। कपसेठी के पकड़ी बरछी गांव के निवासी हेमंत बिंद (30) पुत्र दीना बिंद शुक्रवार रात दिलावलपुर गांव में बारात गया था। उसके साथ उसका फुफेरा भाई और गांव के अन्य युवक भी बारात गए थे। रात में सभी ने साथ खाना खाया पिया और बारात में नाचे। सुबह बारातियों को हेमंत नहीं मिला तो सभी को लगा कि वह गांव लौट गया होगा। जब बाराती गांव आए तो हेमंत के नहीं मिलने पर तलाश शुरू हुई। लगभग 10 बजे उसका शव दिलावलपुर गांव के अनारकली विद्यालय के समीप नहर में मिला। शव देखकर हड़कंप मच गया। शव मिलने के बाद ग्रामीणों ने थाना कपसेठी पुलिस को सूचना दी और मौके पर बुलाया। उसके सिर पर चोट का निशान था। जानकारी पाकर मृतक के परिजन भी घटनास्थल पर पहुंच गए। शव देखकर परिजन बिलखते हुए लिपटकर रोने लगे। ग्रामीणों ने चक्काजाम कर हत्या आरोपी को गिरफ्तार करने की मांग कर रहे हैं।

डॉ.दीपाली महतो का अभिनंदन

मुंबई (उत्तरशक्ति)। संघ लोक सेवा आयोग (वढरउ) 2024 के घोषित परिणामों में मुंबई की डॉ.दीपाली महतो ने आल इंडिया रैंकिंग में 105 वां स्थान प्राप्त किया। डॉ.दीपाली ने सेंट जार्ज हास्पिटल डेंटल कालेज से बी.डी.एस.डिग्री प्राप्त किया। डॉ.दीपाली की इस शानदार उपलब्धि पर मुंबई के वरिष्ठ समाज सेवक डॉ.बाबूलाल सिंह पटेल एवं डॉ.सचिन सिंह (अध्यक्ष-युवा ब्रिगेड एसोसिएशन) ने उनके मुंबई स्थित निवास स्थान पर जाकर शाल एवं पुष्पगुच्छ देकर बधाई एवम शुभकामनायें प्रदान किया। समाज सेवियों ने दीपाली के पिता संजय कुमार महतो (रिटा.एडिशनल कमिश्नर सीजीएसटी) एवं माताजी श्रीमती सुलेखा महतो को पुत्री की सफलता पर बधाई दी। महतो परिवार मुलतः समस्तीपुर, बिहार के निवासी हैं।

मुस्लिम को काम पर न रखें हिंदू दुकानदार,साधु, संतों ने की अपील

मथुरा (उत्तरशक्ति)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में देश को झकझोर दिया है। इसके साथ ही देश में हिंदू-मुस्लिम को धार दिया है। दरअसल, मथूरा आतंकी हमले को बाद से साधु ,संत ,महंतो और धमार्चार्य ने मंदिर के आसपास के इलाके में चलाया जागरूकता अभियान चलाया है कि कोई भी दुकानदार अपने दुकान पर मुस्लिम मजदूर न रखे। व्यापारी भाइयों से संपर्क करते हुए आह्वान किया कि प्रतिष्ठानों पर विधमीर्यों से किसी भी प्रकार के सेवा न लें। अभियान के दौरान दो मुस्लिम नाम छुपाकर करते मिले पोशाक और श्रृंगार का काम ।जिसके बाद साधु संतों ने दुकान का नाम लिखकर रोजगार करने की चेतावनी दी। साथ ही हिंदू व्यापारियों से मुस्लिम युवकों को काम पर न रखने की अपील की ।

किशोरी की पेड़ से लटकी मिली लाश

मैनपुरी (उत्तरशक्ति)। मैनपुरी के कुसमरा में थाना किशनी क्षेत्र के गांव जयसिंहपुर में माता-पिता के बीच होने वाले झगडे.से परेशान होकर 15 वर्षीय किशोरी ने फंदा लगाकर जान दे दी। शव शुक्रवार की रात कटहल के पेड़ पर फंदे से लटका मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव मोर्चरी भेजा। फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल से जांच के लिए साक्ष्य एकत्रित किए। कस्बा के गांव जयसिंहपुर के रहने वाले उदयवीर सिंह की 15 वर्षीय पुत्री रागिनी का शव शुक्रवार की रात को गांव के बाहर लगे कटहल के पेड़ पर दुपट्टे के फंदे से लटका मिला। वहां से गुजर रहे ग्रामीणों ने इसकी जानकारी परिजन को दी। जानकारी मिलने के बाद परिजन मौके पर पहुंचे। कुछ ही देर में वहां लोगों की भीड़ एकत्र हो गई। सूचना मिलने के बाद प्रभारी निरीक्षक ललित भाटी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव को पेड़ से उतरवाया। फोरेंसिक टीम ने नमूने एकत्र किए। थाना प्रभारी ने बताया कि जांच के दौरान पता चला है कि मृतका के माता-पिता के बीच अक्सर झगड़ा होता रहता है। घटना से कुछ देर पहले भी किशोरी के पिता शराब पीकर आए थे और पत्नी को पीटा था। आए दिन होने वाले क्लेश से आहत होकर किशोरी घर से बाहर चली गई। कटहल के पेड़ पर फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली।

घर से 400 मीटर दूर पेड़ पर लटकता मिला छात्रा का शव

बलरामपुर। मेहनाजपुर थाना क्षेत्र के मठ बैजनाथपुर गांव में शुक्रवार सुबह एक 19 वर्षीय युवती का शव पेड़ पर दुपट्टे से लटका मिला। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। परिजनों ने हत्या की आशंका जताई है। मृतका की पहचान शीतल कुमारी (19) पुत्री मिस्री लाल गोंड के रूप में हुई। वह कक्षा 12 की छात्रा थी। जानकारी के अनुसार, शुक्रवार सुबह करीब 5 बजे गांव वालों ने शीतल को घर से 400 मीटर दूर पोखरे के पास पाकड़ के पेड़ पर लटके हुए देखा। इसकी सूचना परिजनों और पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को उतारा और जांच शुरू की। परिजनों ने बताया कि बृहस्पतिवार की रात करीब 10 बजे शीतल पढ़ाई कर रही थी और फिर सोने चली गई थी। सुबह उसका शव पेड़ पर लटका मिला। शव पर मिट्टी लगी थी, जिससे मामला संदिग्ध लग रहा है। शीतल तीन बहनों और एक भाई में दूसरे नंबर की थी। थानाध्यक्ष विरेंद्र सिंह ने बताया कि मृतका के शरीर पर चोट के निशान नहीं है। अभी तक परिजनों की ओर से कोई तहरीर नहीं मिली है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

नूडल्स फैक्टरी विस्फोट में झुलसे तीन मजदूरों को अस्पताल से मिली छुट्टी

गोरखपुर (उत्तरशक्ति)। गीडा सेक्टर 13 में नूडल्स बनाने वाली फैक्टरी में हुए विस्फोट में झुलसे सात में से तीन मजदूरों की हालत ठीक होने पर शुक्रवार को बीआरडी मेडिकल कॉलेज से डिस्चार्ज कर दिया गया। वहीं, गंभीर रूप से झुलसे उमर फारूख व हजरत बेलाल की हालत अभी भी चिंताजनक बनी हुई है। दोनों आईसीयू में भर्ती हैं। इनके अलावा माजिद व मुबारक की स्थिति में भी लगातार सुधार हो रहा है। एक से दो दिन में डॉक्टर उन दोनों को भी डिस्चार्ज कर सकते हैं। मेडिकल कॉलेज से छुट्टी मिलने के बाद तीन मजदूर अपने परिजनों के साथ अररिया के लिए निकल गए। टोटल फास्ट फूड फैक्टरी में नूडल्स बनाने के दौरान बुधवार को तेज धमाका हुआ था। इसमें हजरत बेलाल व उमर फारुख गंभीर रूप से झुलस गए। वहीं, माजिद, मुबारक, अहद, इशा व सलमान आंशिक रूप से झुलस गए थे। झुलसे सातों लोगों को बीआरडी मेडिकल कॉलेज के इमरजेंसी वार्ड लाया गया। बृहस्पतिवार को ईशा, अहद व सलमान के परिजन मेडिकल कॉलेज पहुंचे। शुक्रवार सुबह इन तीनों की हालत में सुधार होने के बाद इन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गई। वहीं, हजरत बेलाल व उमर फारुख अभी भी आइसीयू में ही हैं। उनकी हालत चिंताजनक बनी हुई है। माजिद व मुबारक की स्थिति में भी सुधार हो रहा है।

पहलगाम में आतंकी हमले के विरोध में प्रदर्शन

बस्ती (उत्तरशक्ति)। हरैया तहसील मुख्यालय पर विश्व हिन्दू परिषद एवं बजरंग दल के नेतृत्व में कश्मीर के पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले के विरोध में प्रदर्शन किया गया। मृतकों को श्रद्धांजलि के साथ उनके परिवार वालों के प्रति संवेदना व्यक्त की गई। राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन सौंपा गया। विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारियों ने कहा कि पुलवामा हमले से हर व्यक्ति दुखी और आक्रोशित है। इस्लामिक आतंकवाद के विरोध में केंद्र की सरकार को कठोर निर्णय लेने में अब संकोच नहीं करना चाहिए। बजरंग दल के जिला संयोजक प्रवीण सिंह ने कहा कि इस आतंकी हमले से यह साबित हो गया है कि आतंकवाद का भी धर्म होता है। धर्म पूछ करके पर्यटकों की हत्या करना इस्लामिक जिहाद का पक्का सबूत है। विश्व हिंदू परिषद के जिलामंत्री विवेक सिंह सोनू ने कहा कि अब सनातनियों को इस्लामिक आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होना होगा। विश्व हिंदू परिषद के जिलाध्यक्ष दिनेश मिश्र ने भी लोगों को संबोधित किया।

अब बेहतर बिहार की राजनीति होगी : आनंद मिश्र

बक्सर (उत्तरशक्ति)। पूर्व आईपीएस अधिकारी आनंद मिश्र ने शनिवार को स्थानीय टाउन हॉल में आयोजित आभार मिलन समारोह में 2024 लोकसभा चुनाव में समर्थन देने वाले साथियों एवं कार्यकताओं का आभार जताया। कार्यक्रम की शुरूआत आनंद मिश्र, पूर्व विधायक श्रीकांत पाठक, युवा उद्यमी प्रत्युष पुष्कर, पिताम्बर जी महाराज, मुखिया अजय राम एवं अभिषेक पांडेय ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर की। उपस्थित जनसमूह ने राष्ट्रगान प्रस्तुत किया और पहलगाम आतंकी हमले के शहीदों को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी। आनंद मिश्रा ने चुनावी समर्थन देने वाले साथियों को गमछा एवं सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि यह आयोजन उन सभी जमीनी कार्यकताओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए है जिन्होंने तन-मन-धन से उनका साथ दिया। उन्होंने कहा कि अब सही समय है जब ऊर्जा से भरे साथियों के साथ नई रणनीति बनाकर बेहतर बिहार के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ा जाए। आनंद मिश्र ने वंशवाद की राजनीति से ऊपर उठकर समाज के हर तबके के लिए कार्य करने का संकल्प लिया और एक टीम, एक सोच, एक दिशा आगे बढ़ते रहना है का नारा दिया। कार्यक्रम में प्रश्नोत्तर सत्र भी आयोजित हुआ, जिसमें कार्यकताओं के सवालों का आनंद मिश्र ने खुले दिल से जवाब दिया। कार्यक्रम के दौरान आनंद मिश्रा ने अपने मेगा प्रोजेक्ट आनंद सेवा केंद्रस का भी शुभारंभ किया। आनंद सेवा केंद्र गांव स्तर पर एक सिंगल विंडो सुविधा है, जहां नागरिकों को दस्तावेज संबंधी समस्याओं, कानूनी सहायता, वित्तीय मदद, सरकारी योजनाओं की जानकारी एवं आवेदन प्रक्रिया में सहयोग मिलेगा। आनंद सेवा केंद्र तब तक अपनी जिम्मेदारी निभाएगा जब तक कार्य पूर्ण नहीं हो जाता, साथ ही सतत फॉलो-अप भी सुनिश्चित करेगा। इसका उद्देश्य गांवों में शासन व्यवस्था को सरल और पारदर्शी बनाना है। इस अवसर पर आयोजन समिति के प्रमुख प्रशांत कुमार एवं विकास सिंह कुशवाहा ने सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

पराग साळवे का सेवासंपूर्ति समारोह संपन्न

मुंबई (उत्तरशक्ति)। बृहन्मुंबई महानगरपालिका शिक्षण विभाग, फ /उत्तर अंतर्गत गुरुतेग बहादुर नगर रावळी कॅम्प स्थित क. दा. गायकवाड नगर मनपा शाळा के चित्रकला शिक्षक (कला) पराग विनायक साळवे का सेवा संपूर्ति सत्कार समारोह शाळा के सभागृह में फ/ उत्तर विभाग के आदर्श प्रशासकीय अधिकारी किसन पावडे पाटील की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। प्रमुख अतिथि पूर्व प्रभाग समिती अध्यक्ष पूर्व नगरसेवक रामदास कांबळे, विभाग निरीक्षक पूजा पाटील, कला विभाग बृ.मुं.म.न. पा. के प्राचार्य दिनकर पवार , कार्यानुभव विभाग निदेशिका तृप्ति पेडणेकर एवं धम्मप्रकाश विनायक साळवे, सत्यभामा विनायक साळवे, कल्पना पराग साळवे एवं सभी कला निदेशक उपस्थित थे। निमंत्रक कला अकादमी परिवार, इमारत प्रमुख मुख्याध्यापक विष्णू सातपुते, मधुबाला धम्बीर, उषा पथनवार सहित सैकड़ों गणमान्य उपस्थित थे। सूत्र संचालन नामदेव धनकुटे एवं मिलेश सहारे ने किया।आभार प्रदर्शन विनोद राठोड ने किया।

पॉलिसीधारक की अनुपस्थिति में टर्म इंश्योरेंस क्लेम करने की प्रक्रिया जानें : पॉलिसीबाजार

पटना (उत्तरशक्ति)। लोगों के बीच आम धारणा यह है कि टर्म पॉलिसी खरीदने के साथ ही वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी खत्म हो जाती है, लेकिन ऐसा नहीं है। टर्म इंश्योरेंस पॉलिसी को खरीदना वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करने की तरह पहला कदम जरूर है, लेकिन आपकी अनुपस्थिति में आपकी संपत्ति को किस तरह संभाला जाएगा इसकी योजना बनाना भी महत्वपूर्ण है। क्लेम फाइल करने का समय आमतौर पर बिना बताए आ जाता है और अगर ऐसा होता है, तो नॉमिनी व्यक्ति को अक्सर समझ नहीं आता कि आगे क्या करना है। हालांकि कंपनियों ने क्लेम की प्रक्रिया को आसान बनाया है, लेकिन इस प्रक्रिया को जानना आवश्यक है। वरुण अग्रवाल, हेड-टर्म इंश्योरेंस, पॉलिसीबाजार डॉट कॉम ने कहा कि ह्लसही योजना, और समय पर कार्रवाई मुश्किल समय के दौरान क्लेम की प्रक्रिया को आसान बना सकती है और यह सुनिश्चित कर सकती है कि आपके प्रियजन सुरक्षित हैं। बीमाकर्ता को पॉलिसीधारक की मृत्यु के बारे में जल्द से जल्द बताना चाहिए। इससे पहले, लाभार्थियों को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि पिछले प्रीमियम का भुगतान हो चुका है और पॉलिसी एक्टिव है। नॉमिनी व्यक्ति को क्लेम फॉर्म ऑनलाइन डाउनलोड करके या इसे नजदीकी शाखा से प्राप्त कर सभी डिटेल्स और सपोर्टिंग डॉक्यूमेंट्स के साथ फॉर्म को जमा करना चाहिए ताकि क्लेम प्रक्रिया शुरू की जा सके।

अगली प्रक्रिया क्लेम का मूल्यांकन है जिसमें बीमाकर्ता भुगतान जारी करने से पहले डिटेल्स की जांच करता है। लाभार्थियों की मुश्किलों को कम करने और उनकी मदद करने के लिए, आईआरडीएआई ने क्लेम फाइल करने के 30 दिनों के अंदर क्लेम सेटल करने का निर्देश दिया है। अगर क्लेम सेटलमेंट आवश्यक अवधि के अंदर नहीं किया जाता है, तो बीमा कंपनी ब्याज का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होगी। टर्म इंश्योरेंस आपके परिवार के लिए सुरक्षा कवच प्रदान करता है, लेकिन क्लेम अस्वीकार किए जाने के कुछ सामान्य कारण हैं, जिनके बारे में आपको पॉलिसी खरीदते समय पता होना चाहिए। नॉमिनी व्यक्तियों के लिए क्लेम फाइल करते समय इन चीजों को ध्यान में रखना चाहिए। पॉलिसी खरीदते समय और कोई भी फॉर्म जमा करते समय हमेशा सही और ईमानदारी से जानकारी देना आवश्यक है। हमेशा ध्यान रखें कि पहले से मौजूद किसी भी टर्म पॉलिसी के बारे में बताएं, क्योंकि इससे क्लेम पर असर पड़ सकता है। साथ ही, पहले से मौजूद किसी भी स्वास्थ्य स्थिति के बारे में बताएं, जो सीधे आपके प्रीमियम और कवरेज को प्रभावित करती है। उन स्थितियों के बारे में न बताने से क्लेम रिजेक्ट किया जा सकता है। अगर आप धूम्रपान करते हैं या खतरनाक खेलों में भाग लेते हैं तो इसके बारे में बीमाकर्ता को सूचित करें, क्योंकि वे आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं, जिसके बारे में बीमाकर्ता को पता होना चाहिए। ऐसी कोई भी गतिविधि जो आपके जीवन को खतरे में डाल सकती है, उसके बारे में बताया जाना चाहिए, क्योंकि बीमाकर्ता इस जानकारी के आधार पर आपके कवरेज का मूल्यांकन करेगा। अगर पॉलिसी जारी होने या दुबारा शुरू होने के 12 महीने से अधिक समय बाद आत्महत्या होती है, तो टर्म इंश्योरेंस आत्महत्या के लिए कवरेज प्रदान करता है। अगर मृत्यु इस अवधि के अंदर होती है, तो नॉमिनी व्यक्ति को पूर्ण मृत्यु लाभ नहीं मिल सकता है।

घर के बाहर सो रहे परिवार को कार ने रौदा, मां-बेटी की मौत

गोरखपुर (उत्तरशक्ति)। गुलरिहा इलाके के रघुनाथपुर गांव के भगवानपुर टोला में शुक्रवार रात करीब 10:30 बजे घर के सामने सड़क किनारे चारपाई पर सो रहे एक ही परिवार के सात लोगों को एक तेज रफ्तार कार ने कुचल दिया। इस हादसे में मां-बेटी की मौत हो गई, जबकि पांच अन्य का मेडिकल कॉलेज में इलाज चल रहा है। रघुनाथपुर टोला भगवानपुर में शुक्रवार रात साईदा खातून (44) परिवार के छह अन्य सदस्यों बेटी सूफिया (16), राबिया खातून (23), निहाल (05), जुबेर (17), मरियम और सुबराती (16) साथ घर के सामने चारपाई पर सो रही थीं। रात करीब 10.30 बजे भटहट की तरफ से आ रही तेज रफ्तार कार ने चारपाई पर सो रहे लोगों को कुचल दिया। हादसे के बाद कार सवार चार युवक गाड़ी छोड़कर भागने लगे। आस-पास के लोगों ने दौड़ाकर एक युवक को पकड़कर पुलिस को सौंप दिया। वहीं घायलों को बीआरडी ले जाया गया, जहां साईदा और सूफिया को मृत घोषित कर दिया गया। उधर, पकड़े गए युवक ने बताया कि भटहट से शादी में जाने के लिए निकले थे। वह फोटोग्राफर है। वहीं कार में शराब की बोतलें मिली हैं।

एफसीआई का टेंडर दिलाने के नाम पर चार करोड़ ठगे

लखनऊ (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश में एफसीआई (भारतीय खाद्य निगम) में टेंडर दिलाने के नाम पर चार करोड़ रुपये की ठगी करने वाले जालसाज को एसटीएफ ने गिरफ्तार किया है। इसकी पहचान नजाहिर हुसैन उर्फ अरविंद चौहान उर्फ सागर खंडेलवाल के रूप में हुई है। एसटीएफ ने इसे लखनऊ के गोमतीनगर स्थित पुलिस मार्डन स्कूल के पास से गिरफ्तार किया। आरोपी के पास से दो मोबाइल फोन, 1500 रुपये, फर्जी आधार कार्ड, एफसीआई का फर्जी पहचान पत्र, फर्जी बैंक ड्राफ्ट, पैन कार्ड और टेंडर से संबंधित दस्तावेज मिले हैं। एसटीएफ के एडिशनल एसपी विशाल विक्रम सिंह ने बताया कि गोमतीनगर के विरामखंड निवासी सैयद रफत मुईन पुत्र सैयद मुइनुद्दीन ने शिकायत की थी। इसमें उन्होंने बताया था कि एफसीआई में 140 करोड़ का टेंडर दिलाने के नाम पर अरविंद चौहान उर्फ सागर खंडेलवाल, अभिषेक ठाकुर, विशाल गर्ग, अभिषेक जैन व प्रकाश ने चार करोड़ की ठगी की है। इसी बीच मुखबिर से सूचना मिली कि एफसीआई में चावल, ज्वार मक्का आदि उठान का टेंडर दिलाने के नाम पर ठगी करने वाले गिरोह का सरगना नजाहिर हुसैन किसी से मिलने के लिए पुलिस मार्डन स्कूल विनीतखंड आने वाला है। इस सूचना पर एसटीएफ की टीम वहां पहुंची और घेराबंदी करते हुए आरोपी नजाहिर हुसैन को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि उसका असली नाम नजाहिर हुसैन है। वह मूल रूप से बरेली के नवाबगंज अभयराजपुर इलाके का रहने वाला है। उसने इंटर तक की पढ़ाई की है। इसके बाद आरोपी गैंग बनाकर खुद को एफसीआई का अधिकारी अरविंद चौहान उर्फ सागर खंडेलवाल बताकर टेंडर दिलाने के नाम पर फर्जी व कूटरचित दस्तावेज तैयार कर ठगी करता है।

घर से लापता कैंसर पीड़ित युवक की ट्रेन से कटकर मौत

कानपुर (उत्तरशक्ति)। रेलबाजार थानाक्षेत्र में घर से लापता कैंसर पीड़ित की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। पुलिस ने मृतक की फोटो और अन्य विवरण सोशल मीडिया में शेयर किया तो परिजनों ने पोस्टमॉर्टम हाउस पहुंचकर मृतक की शिनाख्त की। रेलबाजार में फाई साहब का हाता निवासी मो. लियाकत का बेटा मो. तसलीम (33) मेट्रो में मजदूरी करता था। उसकी पत्नी नाजनी बेगम ने बताया कि पति कैंसर से पीड़ित थे। बताया कि पति 23 अप्रैल को सुबह 9:30 बजे घर से निकल गए थे। इसके बाद वह देर रात तक नहीं लौटे। उनके भाई तहसीन, मोइद्दीन और अन्य परिजनों ने पूरी रात तलाश की पता नहीं चला। इसके बाद दूसरे दिन 24 अप्रैल को भी सुबह से पति की तलाश में जुट गए। रेलवे स्टेशन, बस अड्डा, हैलट और उर्सला अस्पताल के भी चक्कर लगाए लेकिन कोई जानकारी नहीं हो सकी। बताया कि 25 अप्रैल की रात में सोशल मीडिया पर पति की मृत फोटो देखी तो पुलिस से संपर्क किया। पुलिस ने सुजातगंज में ट्रेन की चपेट में आने की बात कही। रेलबाजार पुलिस मामले की जांच कर रही है।

विवाद में युवक की पीटकर हत्या

बस्ती (उत्तरशक्ति)। परशुरामपुर। थाना क्षेत्र के निपानिया गांव के बृहस्पतिवार रात बच्चों के विवाद में मारपीट होने लगी। चारपाई की पाटी से सिर पर प्रहार से 45 वर्षीय युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे सीएचसी ले जाया गया, जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। मृतक के बेटे की तहरीर पर पुलिस ने हत्या का केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पारिवारिक सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, थाना क्षेत्र के निपानिया गांव निवासी बुधराम 45 पुत्र रघु लाल बृहस्पतिवार की शाम करीब सात बजे खम्हरिया बाजार में सब्जी लेने गए थे। पुलिस को दी गई तहरीर में मृतक के बेटे ने बताया कि बाजार से लौटते समय करीब नौ बजे मेढाए गांव के समीप नहर की पुलिया के पास गांव के गोपी शर्मा पुत्र पीत्तरदीन से कहासुनी होने लगी। कुछ देर बाद मामला मारपीट में तब्दील हो गया। आरोप है कि गोपी शर्मा ने बुधराम पर चारपाई की पाटी से प्रहार कर दिया। सिर में गंभीर चोट लगने के कारण बुधराम बेहोश हो गए। एंबुलेंस से उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परशुरामपुर ले जाया गया। वहां डॉक्टर ने बुधराम को मृत घोषित कर दिया। बुधराम के बड़े बेटे राजेश चौहान की तहरीर पर पुलिस ने हत्या का केस पंजीकृत कर आरोपित गोपी शर्मा को गिरफ्तार कर लिया है।

जेल में बंद कैदी न फर्स्ट डिवीजन के साथ पास की हाई स्कूल की परीक्षा

इटावा (उत्तरशक्ति)। इटावा जिला कारागार में बंद कैदी ने हाई स्कूल की परीक्षा में काफी मेहनत की और उसके बाद उसने परीक्षा को पास करते हुए लोगों को चौंकाने का काम किया। कैदी ने फर्स्ट डिवीजन के साथ हाई स्कूल की परीक्षा को अच्छे नंबरों से पास किया। इटावा में कैदी के जब्बे को लोग सलाम कर रहे हैं। जेल में बंद कैदी ने मेहनत की और उसके बाद हाई स्कूल की परीक्षा को अच्छे नंबरों के साथ पास किया। बताते चले की कानपुर देहात जिले के थाना डेरापुर ग्राम जरौली करणपुरा के रहने वाले कुलपति पुत्र संतोष को औरैया की पुलिस ने धारा 302, 364, 201, 34 व्हउ के अंतर्गत गिरफ्तार किया गया था जिसके बाद कैदी को इटावा जिला कारागार में 10 नवंबर 2023 को लाया गया था। जब से कह दी जेल में बंद होकर अपनी सजा को काटने का काम कर रहा था। जिला कारागार में बंद कुलपत नाम के कैदी ने हाई स्कूल की परीक्षा को लेकर जेल अधीक्षक कुलदीप भदोरिया से गुहार लगाई थी कि उसकी पढ़ाई करने में मदद की जाए। इसके बाद जेल प्रशासन के द्वारा पठन-पाठन के लिए शिक्षा सामग्री उपलब्ध कराई गई। छात्र ने हाई स्कूल की परीक्षा में अच्छे से तैयारी की और रोल नंबर 1254506056 के साथ परीक्षा दी। कल यूपी बोर्ड का परिणाम घोषित हुआ और इसमें जेल में बंद कर दी कुलपत ने अच्छी मेहनत की और 600 में से 469 अंक लाइव जिसके बाद उनकी 78% बनी और फर्स्ट डिवीजन पर आ गए। जब इस बात की छात्रा को जानकारी हुई तो उसके चेहरे पर खुशी की लहर देखने को मिली तो वही जेल अधीक्षक ने भी छात्र को उसकी सफलता को लेकर बधाई दी।

18 वर्षीय छात्र की पीठ पर मारी गोली, मौके पर ही मौत

छत्तीसगढ (उत्तरशक्ति)। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर-रामानुजगंज ज़िले के डिंडो चौकी अंतर्गत बेलसर गांव के युवक मुकेश कुमार आयाम, शुक्रवार को अपने गांव के ही एक व्यक्ति राजेंद्र पंडो के साथ शिकार के लिए निकला था। दोनों विमलापुर-बेलकोटा के जंगल में जंगली सूअर की तलाश में अलग-अलग दिशा में फैल गए। तभी झाड़ियों के पीछे से कुछ आवाजें सुनाई दीं और राजेंद्र ने बिना सोचे-समझे भरमार बंदूक से गोली चला दी। दुर्भाग्यवश, वो आवाज किसी जानवर की नहीं बल्कि उसके अपने साथी मुकेश की थी। गोली उसकी पीठ में जा लगी, और वो वहीं गिर पड़ा। दर्द में तड़पते मुकेश के पास जब राजेंद्र पहुँचा, तब तक बहुत देर हो चुकी थी-मुकेश ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। राजेंद्र पंडो घबराया हुआ गांव लौटा और परिजनों को घटना की जानकारी दी। परिजन और ग्रामीण तत्काल जंगल पहुंचे, जहां उन्होंने मुकेश को मृत अवस्था में पाया। उसकी पीठ में गोली लगी थी और शरीर औंधे मुंह पड़ा हुआ था। शाम को अंधेरा घिर जाने के कारण पुलिस तत्काल शव नहीं ले जा सकी। जंगल में जंगली जानवरों के खतरे को देखते हुए परिजनों और ग्रामीणों ने पूरी रात शव के पास पहरा दिया। सुबह होते ही डिंडो चौकी और त्रिकुंडा थाने की पुलिस मौके पर पहुंची। एसडीओपी बाजीलाल सिंह भी वहां मौजूद थे। शव को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भिजवाया गया। पुलिस ने आरोपी राजेंद्र पंडो को गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही, घटना में इस्तेमाल हुई भरमार बंदूक को भी जब्त कर लिया गया है। शुरूआती जांच में यह स्पष्ट हुआ है कि यह एक गलत पहचान की घटना थी, लेकिन पुलिस अन्य लोगों की भी पहचान कर रही है जो उस समय जंगल में मौजूद थे।

झांसी जिला अस्पताल के बच्चा वार्ड में लगी आग

झांसी (उत्तरशक्ति)। झांसी में शनिवार शाम जिला अस्तपाल के बच्चा वार्ड की छत पर शार्ट सर्किट से अचानक आग भड़क उठी। थोड़ी देर में आग आगे फैलने लगी। आग की लपटें देखकर वहां चीख-पुकार मच गई। जिनके बच्चे वार्ड में भर्ती थे, वह अपने बच्चों को लेकर बाहर भागने लगीं। अस्पताल प्रशासन ने आग बुझाने की कोशिश की। दमकल की गाड़ियां भी बुला ली गईं। करीब आधे घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। चिल्ड्रेन वार्ड में करीब 16 बच्चे भर्ती थे जिन्हें तत्काल वार्ड से बाहर निकाला। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है शाम करीब साढ़े चार बजे बच्चा वार्ड की छत पर खुले तार से शार्ट सर्किट होने लगा। वहां सूखे पत्ते पड़े थे। शार्ट सर्किट की वजह से पैदा हुई चिंगारी ने उनमें आग पकड़ ली। आग भड़कते ही अस्पताल प्रबंधन ने बिजली आपूर्ति काट दी। बच्चा वार्ड में आग लगने की सूचना पर एसपी सिटी ज्ञानेंद्र सिंह पुलिस बल के साथ पहुंच गए। दमकल की तीन गाड़ियां पहुंच गईं। कुछ देर में आग में काबू पा लिया गया। एसपी सिटी के मुताबिक प्रारंभिक छानबीन में वार्ड की छत पर खुले तारों में शार्ट सर्किट की वजह से आग लगने की बात सामने आई है। नीचे वार्ड तक आग का कोई प्रभाव नहीं था। कोई भी व्यक्ति इसमें चुटहिल नहीं हुआ।घटना की सूचना पर एस पी सिटी ज्ञानेंद्र कुमार, सीओ सिटी स्नेहा तिवारी, कोतवाल मौके पर जा पहुंचे। बताते चलें कि कुछ माह पूर्व मेडिकल कॉलेज के बच्चा वार्ड में आग लगी थी, जिसमें करीब डेढ़ दर्जन बच्चों की मौत हो गई थी।

पर्यटकों को सुरक्षा को लेकर निखिल रूपारेल ने केंद्र सरकार पर साधा निशाना

मुंबई। कश्मीर की पहलगाम में क्रूर आतंकवादियों के हाथों मारे गए निर्दोष पर्यटकों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए एनएसयूआई के नेशनल डेलीगेट निखिल रूपारेल ने पर्यटकों की सुरक्षा को लेकर सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि यह बड़े आश्चर्य की बात है कि जहां देशभर से इतनी बड़ी संख्या में पर्यटक जाते हैं वहां सुरक्षा के नाम पर एक भी सेना के जवान की ड्यूटी नहीं लगाई गई थी। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने बाबा रामदेव, बागेश्वर बाबा समेत दर्जनों बाबाओं और कथावाचकों को वीआईपी सुरक्षा दे रखी है, वहीं सरकार को टैक्स देने वाले पर्यटकों की सुरक्षा के लिए सरकार ने कोई इंतजाम नहीं किए थे। उन्होंने कहा कि अगर वहां सिर्फ बाबा रामदेव की आधी सुरक्षा व्यवस्था रही होती, तो भी यह घटना नहीं घटती। रूपारेल ने घटना के बाद एयरलाइंस कंपनियों द्वारा पर्यटकों से वसूले जा रहे मनमानी किराए पर हमला बोलते हुए कहा कि क्या सरकार को यह लूट नहीं दिख रही है? एयरलाइंस कंपनियां आपदा में भी अवसर तलाश रही हैं।

जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक ने किया जिला कारागार का औचक निरीक्षण

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। जिलाधिकारी के साथ पुलिस अधीक्षक ने संयुक्त रुप से जिला कारागार का औचक निरीक्षण कर बैरकों की सघन तलाशी ली,इस दौरान कुछ भी आपत्तिजनक नही मिला, साथ ही बन्दियों से सवांद करते हुए भोजन, स्वास्थ्य सहित अन्य जानकारी प्राप्त की गयी।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी ध्रुव खाड़िया, जेल अधीक्षक, जेलर सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

रविवार और सोमवार को जगदीशपुर रेलवे फाटक रहेगा बंद

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। वाराणसी-लखनऊ मार्ग पर स्थित जगदीशपुर रेलवे फाटक रविवार और सोमवार को सुबह आठ बजे से लेकर रात 8 बजे तक बंद रहेगा। बरिष्ठ रेल खण्ड अभियंता रेल पथ उत्तर रेलवे श्रीकृष्णा नगर ने अवगत कराया कि जौनपुर सिटी से जफराबाद रेलवे स्टेशन के बीच स्थित जगदीशपुर रेलवे क्रासिंग जिसका रेल व स्लीपर खराब हो गया है। ट्रेनों के आवागमन के लिए गति प्रतिबंध लगा हुआ है। खराब स्लीपर को रविवार और सोमवार को सुबह आठ बजे से लेकर रात 8 बजे तक बदलने का कार्य किया जायेगा, इस दरम्यान सड़क यातायात प्रभावित रहेगा। उन्होने जिलाधिकारी को पत्र लिखकर कार्य दरम्यान सुरक्षा व्यवस्था का इंतजाम करने का अनुरोध किया है।

बृजेश सिंह ने भतीजे शुभम सिंह के शुभ विवाह में सम्मिलित हो कर दिया आशीर्वाद

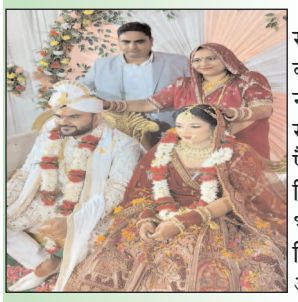

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। बृजेश सिंह सन फार्मा कंपनी के मैनेजर पद पर कार्यरत हैं। नालासोपारा पूर्व ओसवाल नगरी स्थित साईं अष्टर कोऑपरेटिव सोसायटी के चैयरमेन है। वह अपने पैतृक गांव सरायडीह, पोस्ट मारिकपुर जिला जौनपुर उत्तर प्रदेश में अपने भतीजे शुभम संजय सिंह के शुभ विवाह में उपस्थित होकर सह पत्नी अर्चना के साथ वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान किया । शुभम संग विशाखा दिनांक 18 अप्रैल 2025 दिन शुक्रवार को परिणय सूत्र में बंधे। जिसमें दादा उदल सिंह, दादी राजकुमारी सिंह, पिता संजय सिंह, माता सुमन सिंह, दादा त्रिभुवन सिंह, राजेन्द्र सिंह, दादी प्रमीला सिंह, काका राकेश सिंह , विमलेश सिंह , अनिल सिंह , बृजेश सिंह, देवेंद्र सिंह , विकास सिंह, राजन सिंह , काकी नीलम सिंह , अर्चना सिंह , चंदा सिंह , रेनू सिंह, अर्चना बृजेश सिंह , संगीता सिंह , संगीता प्रिंस सिंह , पूजा सिंह , रुचि सिंह , भाई सौरभ , शिवम, नितिन , नकुल , शौर्या , अर्जुन, पार्थ , विशेष , आदर्श , श्रीमती बाला, रीना , पुनम सिंह, सोनम उदय सिंह, सपना , भूमि ,तृप्ती सिंह सहित कई लोगों ने वर-वधु को आशीर्वाद प्रदान किया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना किया ।

इंटरमीडिएट परीक्षा में फेल होने पर छात्र ने मुंबई में दी जान

महराजगंज। सपनों का शहर भी उसे बचा नहीं सका। यूपी के महराजगंज ज़िले से हैरान करने देने वाला मामला सामने आया है। जहां इंटरमीडिएट परीक्षा में फेल होने की खबर ने गांव के युवा संजय वरुण की जिंदगी को निगल लिया। बता दें कि कोल्हूई थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत राजमंदिर निवासी 22 वर्षीय संजय, इस वर्ष इंटरमीडिएट की परीक्षा देने के बाद रोजी-रोटी की तलाश में मुंबई चला गया था। कल शुक्रवार को जैसे ही बोर्ड का रिजल्ट आया, उसकी उम्मीदें टूट गईं। फेल होने की सूचना मिलते ही वह गहरे अवसाद में चला गया। इसी सदमे में संजय ने मुंबई में फंदा लगाकर जान दे दी। घटना की खबर जैसे ही गांव पहुंची, पूरे परिवार में कोहराम मच गया।

ईरान के प्रमुख बंदरगाह पर भीषण विस्फोट, अब तक 5 की मौत, 500 से ज्यादा घायल

ईरान। ईरान के दक्षिणी बंदरगाह शाहिद राजाई में शनिवार, 26 अप्रैल 2025 को एक भीषण विस्फोट हुआ, जिसमें कम से कम 5 लोगों की मौत हो गई और 700 से अधिक लोग घायल हो गए। यह विस्फोट बंदर अब्बास के समीप स्थित इस बंदरगाह के सिना कंटेनर यार्ड में हुआ, जो ईरान का सबसे बड़ा वाणिज्यिक बंदरगाह है और रणनीतिक होर्मुज जलडमरूमध्य के पास स्थित है। प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार, विस्फोट एक छोटे से आग के कारण शुरू हुआ, जो कई कंटेनरों में फैल गया। इन कंटेनरों में संभावित रूप से खतरनाक रसायन या ज्वलनशील सामग्री रखी गई थी। विस्फोट के बाद लगी आग और काले धुएं का गुबार कई किलोमीटर दूर से दिखाई दिया। कई इमारतें ढह गईं और आसपास की खिड़कियों के शीशे टूट गए। विस्फोट की आवाज केश्म द्वीप तक सुनाई दी, जो लगभग 26 किलोमीटर दूर है।?

ईरानी अधिकारियों ने इस घटना को लेकर एक जांच शुरू की है। राष्ट्रीय ईरानी तेल रिफाइनिंग और वितरण कंपनी ने बताया कि विस्फोट का उनके बुनियादी ढांचे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

कुछ रिपोर्टों के अनुसार, इस विस्फोट से पहले, शाहिद राजाई बंदरगाह ने मार्च 2025 में चीन से सोडियम पक्लोरेंट की खेप प्राप्त की थी। यह रसायन ठोस रॉकेट ईंधन के निर्माण में उपयोग होता है और ईरान के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम के लिए महत्वपूर्ण है। इस खेप को दो जहाजों, गोलबोन और जायरन, द्वारा लाया गया था, जिसमें से गोलबोन ने 1,000 टन सोडियम पक्लोरेंट लोड किया था। विशेषज्ञों का मानना है कि इस रसायन का उपयोग ईरान के मध्य-सीमा बैलिस्टिक मिसाइलों के लिए ईंधन बनाने में किया जाएगा। इस खेप के आगमन से यह संकेत मिलता है कि ईरान अपने मिसाइल उत्पादन कार्यक्रम को फिर से सक्रिय कर रहा है, जो अक्टूबर 2024 में इजराइल द्वारा किए गए हमलों से प्रभावित हुआ था ।

अब एक भी पाकिस्तानी बिहार में नहीं रहेगा सम्राट चौधरी बोले- जरूरत पड़ी तो करेंगे डिपोर्ट

पटना। बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 26 पर्यटकों की हत्या के बाद केंद्र सरकार ने आतंकवाद प्रायोजित करने वाले पाकिस्तान के नागरिकों का वीजा रद्द करने का जो फैसला किया है, वह बिहार में भी पूरी तरह लागू होगा।

सम्राट चौधरी ने शनिवार को कहा कि पाकिस्तानी नागरिकों को 48 घंटे में भारत छोड़ देने को कहा गया है और यह समय सीमा कल 27 अप्रैल को समाप्त हो रही है। उन्होंने कहा कि बिहार में जो पाकिस्तानी नागरिक रह रहे हैं, उनकी पहचान कर ली गई है और जरूरत पड़ी तो उन्हें डिपोर्ट किया जाएगा। वीजा रद्द होने के बाद किसी पाकिस्तानी के यहां रहने का कोई उपाय नहीं। जो नहीं जाएंगे, उनके खिलाफ कार्रवाई होगी।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि पहलगाम आतंकी हिंसा भारत पर हमला है। दुख और आक्रोश के इस समय में पूरा देश एकजुट है। इस पर किसी को राजनीति नहीं करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जब बिहार की धरती से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद के आकाओं को मिट्टी में मिला देने का कड़ा संकल्प ले लिया है, तो उसे पूरा करने में बिहार हर कदम पर साथ खड़ा रहेगा। चौधरी ने कहा कि यदि पाकिस्तान ने पहलगाम नरसंहार में अपनी नापाक संलिप्तता स्वीकार करने की बजाय भारत से टकराव का रुख अपनाया और पिछले युद्ध के बाद हुआ शिमला समझौता रद्द कर दिया है, तो यह अच्छा ही है। अब भारत उनकी सीमा में घुसकर बदला लेगा।

संजना बिंद बनी बिंद समाज विकास संघ की महिला समिति सदस्य

गुजरात (उत्तरशक्ति)। गत दिवस श्रीमती संजना प्रेमचंद बिंद, बिंद समाज विकास संघ की महिला सूरत महानगर अध्यक्ष बिंदु चंद्रशेखर बिंद के कर कमलों द्वारा सदस्यता ग्रहण की, संजना बिंद, ग्राम सभा, खेवखर घमहां, पोस्ट अभोली, जिला भदोही, उत्तर प्रदेश की निवासी हैं। ये हीरानगर सोसायटी राधा कृष्ण मंदिर वराछा रोड, सूरत गुजरात में अपने पति के साथ रहकर घर की गृहणी होते हुए घर में इमिटेशन का काम करते हुए अपने पति के साथ जीवन यापन करने में कदम से कदम मिलाकर भरपूर मदद करतीहै। समाज के हर क्षेत्र में अपना योगदान देती रहती हैं। सूरत के किसी भी जगह अगर समाज के लोगों को कुछ भी जरूरत पड़ता है तो वह महिला सूरत अध्यक्ष बिंदु बिंद के साथ मिलकर हर किसी के सुख-दुख में भागीदारी देते हुए उनका हर संभव मदद करने में प्रयास करती हैं। उनके पति प्रेमचंद बिंद सूरत में कपड़े का सांचा चलाने का काम करते हैं, उनके पति और इन्होंने संघ को बताया कि जिस तरह से बिंद समाज विकास संघ इस समय पूरे भारत में लोगों की मदद के लिए हर समय आगे बढ़कर काम करता है। हम लोग भी समाज एवं गैर समाज के किसी भी प्रकार की लोगों की मदद के लिए हर संभव प्रयास करेंगे इन्होंने कहा कि संघ के नीति और नियमों के अनुसार जो भी कार्य होंगे हर क्षेत्र में हर कार्य को पूरा किया जाएगा। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ शेषधर बिंद और संघ के सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया।

पुलिस के सक्रियता से बैग को किया गया बरामद

शाहगंज, जौनपुर(उत्तरशक्ति)।डा0 कौस्तुभ पुलिस अधीक्षक जौनपुर द्वारा अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे ।अभियान में अपर पुलिस अधीक्षक नगर जौनपुर आयुष श्रीवास्तव के कुशल निर्देशन व क्षेत्राधिकारी शाहगंज अजीत सिंह चौहान के कुशल पर्यवेक्षण व प्रभारी निरीक्षक दीपेन्द्र सिंह थाना कोतवाली शाहगंज जौनपुर के कुशल मार्गदर्शन में आवेदिका श्रद्धा तिवारी पत्नी अरुण कुमार तिवारी निवासी सिकंदरपुर पट्टी खैरूद्दीन पुर थाना पवई जनपद आजमगढ दिनांक 24 .04 .2025 को सुबह लगभग 7:30 बजे ऑटो यूपी 65 एन 3757 से अपने घर जा रही थी घर पहुंचने पर पता चला कि उनका एक बैग ऑटो में छूट गया है जिनके द्वारा थाना स्थानीय पर सूचना दी गई सूचना के क्रम में पुलिस के सक्रियता से आज बैग को बरामद किया गया जिसमें लगभग ढाई लाख रुपए के जेवरात व ?-25000 नगद था जिसको प्रकार आवेदिका काफी प्रसन्न हुई ।

सिपाही ग्राम प्रधान की पत्नी को लेकर हुआ फरार, बीमार सास को इलाज कराने गई थी अस्पताल

हापुड़। उत्तर प्रदेश के हापुड़ जिले से एक अजीबो-गरीब मामला सामने आया है। यहां ग्राम प्रधान की पत्नी अपने सिपाही प्रेमी के साथ फरार हो गई थी। पुलिस ने शिकायत मिलने के बाद तेजी से कार्रवाई करते हुए महिला को राजस्थान के अजमेर से बरामद कर लिया और परिजनों को सौंप दिया है। हापुड़ देहात क्षेत्र में ग्राम प्रधान की मां की तबीयत खराब होने पर उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था। मां की देखभाल के लिए ग्राम प्रधान ने अपनी पत्नी को अस्पताल में छोड़ा था। लेकिन 13 अप्रैल को वह अपनी बीमार सास को छोड़ सिपाही प्रेमी के साथ भाग निकली। पीड़ित पति ने पत्नी के गायब होने के बाद ग्राम प्रधान ने काफी तलाश की, लेकिन जब कुछ पता नहीं चला तो पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पति ने बताया कि उसकी पत्नी पुलिस भर्ती की तैयारी कर रही थी और इसी दौरान सोशल मीडिया पर उसकी दोस्ती राजस्थान पुलिस के एक सिपाही से हो गई थी। जल्द ही दोस्ती प्यार में बदल गई और दोनों ने फरार होने का फैसला कर लिया। शिकायत के बाद पुलिस ने जांच शुरू की और महिला को राजस्थान के अजमेर से बरामद कर लिया। अब महिला को परिजनों को सौंप दिया गया है।

वाहन चोरी गैंग का सरगना गिरफ्तार, 197 वारदातों का हुआ खुलासा

गुड़गांव। वाहन चोरी गैंग के सरगना को गुड़गांव पुलिस ने अलवर राजस्थान से काबू करने में सफलता हासिल की है। आरोपी की पहचान राजस्थान निवासी सवाई माधोपुर विनोद के रूप में हुई है। विनोद पर चोरी सहित अन्य धाराओं के तहत 55 मुकदमें राजस्थान में दर्ज हैं। वहीं, मामले में पुलिस ने आरोपी के अन्य साथियों ऋषिकेश उर्फ ऋषि, राम प्रसाद उर्फ राजवीर, मांगीलाल को भी काबू कर लिया है। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि विनोद ने गुड़गांव में पांच वारदातों को अंजाम दिया है। उसके खिलाफ राजस्थान में 55 मामले दर्ज हैं। वहीं, ऋषिकेश उर्फ ऋषि पर 85, राम प्रसाद उर्फ राजवीर पर 56 मुकदमे दर्ज हैं। वहीं, मांगीलाल पर एनडीपीएस का एक केस दर्ज है। पूछताछ में सामने आया कि आरोपी वारदात को अंजाम देने से पहले रेकी करते थे और इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस के जरिए गाड़ियों को स्टार्ट कर लेते थे। आरोपियों के पास से चोरी की पांच क्रेटा कार व एक बाइक बरामद की है। पुलिस की मानें तो आरोपी विनोद को अदालत में पेश कर 7 दिन के रिमांड पर लिया गया है। आरोपी से पूछताछ की जा रही है। जांच के दौरान जो भी तथ्य सामने आएंगे उसके आधार पर कार्रवाई की जाएगी। आपको बता दें कि 27 मार्च को एक व्यक्ति ने सदर थाना पुलिस को शिकायत दी थी कि 26 मार्च की रात को सेक्टर-38 से किसी ने उसकी कार चोरी कर ली। मामले में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए उक्त आरोपियों को काबू किया है।

प्यार में धोखा खाई सिंगर ज्योति लाम्बा की गुहार : शादी की, मगर पत्नी का दर्जा नहीं दिया'

मुंबई। अंधेरी पश्चिम की निवासी और गायिका ज्योति लाम्बा (37) ने प्यार में मिले धोखे और न्याय की लड़ाई को लेकर शुक्रवार को अंधेरी पूर्व में एक प्रेस वार्ता की। उन्होंने बताया कि उपेश ठक्कर नामक व्यक्ति ने उनसे हिंदू रीति-रिवाज से शादी करने के बावजूद अब पत्नी मानने से इनकार कर दिया है।

ज्योति लाम्बा के अनुसार, 16 सितंबर 2022 को एक सहेली के जन्मदिन पार्टी में उनकी मुलाकात 40 वर्षीय उपेश ठक्कर से हुई, जो धीरे-धीरे प्रेम में बदल गई। इसके बाद 19 अप्रैल 2024 को अंबरनाथ (ठाणे) स्थित शिव मंदिर में पारंपरिक हिंदू रीति से दोनों की शादी हुई। शादी के बाद दोनों मलेशिया, कश्मीर, दिल्ली और उज्जैन (महाकाल) जैसे स्थलों पर साथ घूमे। कुछ समय बाद उपेश उन्हें गुजरात लेकर गया और वहां किराए के मकान में रखा। लेकिन 12 जनवरी 2025 को यह कहकर उपेश ठक्कर घर से निकला कि वह

बिजनेस के सिलसिले में बाहर जा रहा है और कभी संपर्क नहीं किया। ज्योति ने बताया कि 26 जनवरी 2025 को जब ठक्कर से किसी तरह संपर्क हुआ तो उसने साथ रहने से इनकार कर दिया,जिससे रिश्ते में दरार आ गई। 6 फरवरी 2025 को दोनों परिवारों के बीच बातचीत भी हुई, जहां उपेश ठक्कर ने कथित तौर पर समझौते के तहत पैसा देकर पीछा छुड़ाने की बात कही, जिसे ज्योति ने ठुकरा दिया।

ज्योति लाम्बा ने 26 फरवरी 2025 को वसोर्वा पुलिस स्टेशन में शिकायत की लेकिन पुलिस ने 4 अप्रैल 2025 को मामला दर्ज किया। एक साल तक उनके साथ दांपत्य संबंध बनाए गए और अब उन्हें पत्नी मानने से इनकार किया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि पुलिस ने यौन शोषण के गंभीर आरोप को दरकिनार करते हुए सिर्फ दहेज उत्पीड़न का मामला दर्ज किया और कार्रवाई अधूरी छोड़ दी। ज्योति लाम्बा ने कहा कि ₹मैं सिर्फ न्याय चाहती हूं। जब शादी हुई है तो मुझे पत्नी का दर्जा मिलना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता तो कानून से मदद चाहिए। आज मैं दर-दर भटक रही हूं और मेरी कोई सुनवाई नहीं हो रही,₹ भावुक स्वर में ज्योति ने कहा। हमारा यह मामला एक बार फिर रिश्तों में धोखे और महिलाओं के अधिकारों को लेकर गंभीर सवाल खड़े करता है।

मीडिया चैनलों के लिए सरकार ने जारी किए सख्त आदेश

जम्मू। भारत सरकार ने सभी मीडिया चैनलों के लिए विशेष एडवायरी जारी की है , जिसका पालन करना जरूरी बताया गया है। पहलगाम अटैक के बाद भारत व पाकिस्तान के बीच हालात तनावपूर्ण हो गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पाकिस्तान के लिए 5 बड़े बैन लगा दिए हैं, बोर्डर के पास भी स्थिति तनावपूर्ण बनी हुई है। जिसके चलते सभी मीडिया चैनलों को यह आदेश दिए गए हैं कि वे रक्षा अभियानों और सुरक्षा बलों की आवाजाही का लाइव कवरेज दिखाने से परहेज करें। एडवायजरी के नियम में बताया गया है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में, सभी मीडिया प्लेटफॉर्म, समाचार एजेंसियों और सोशल मीडिया उपयोगकताओं के लिए एडवायजरी जारी की है को सलाह दी जाती है कि वे रक्षा और अन्य सुरक्षा संबंधी ऑपरेशनों से संबंधित मामलों पर रिपोर्टिंग करते समय अत्यधिक जिम्मेदारी का प्रयोग करें और मौजूदा कानूनों और विनियमों का सख्ती से पालन करें।

विशेष रूप सेः रक्षा संचालन या आंदोलन से संबंधित कोई भी वास्तविक समय कवरेज, दृश्यों का प्रसार या स्रोत-आधारित जानकारी के आधार पर रिपोर्टिंग नहीं की जानी चाहिए। संवेदनशील जानकारी का समय से पहले खुलासा अनजाने में शत्रुतापूर्ण तत्वों की सहायता कर सकता है और परिचालन प्रभावशीलता और कर्मियों की सुरक्षा को खतरे में डाल सकता है।

पिछली घटनाओं ने जिम्मेदार रिपोर्टिंग के महत्व को रेखांकित किया है। कारगिल युद्ध, मुंबई आतंकवादी हमले (26/11) और कंधार अपहरण जैसी घटनाओं के दौरान, अप्रतिबंधित कवरेज ने राष्ट्रीय हितों पर अनपेक्षित प्रतिकूल परिणाम डाले हैं। मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म और व्यक्ति राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कानूनी दायित्वों के अलावा, यह सुनिश्चित करना हमारी सांझा नैतिक जिम्मेदारी है कि हमारी सामूहिक कार्रवाइयों से चल रहे अभियानों या हमारे बलों की सुरक्षा को कोई खतरा न हो। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने पहले ही सभी टीवी चैनलों को केबल टेलीविजन नेटवर्क (संशोधन) नियम, 2021 के नियम 6(1)(पी) का पालन करने के लिए सलाह जारी की है। नियम 6(1)(पी) में कहा गया है कि केबल सेवा में कोई भी ऐसा कार्यक्रम नहीं दिखाया जाना चाहिए जिसमें सुरक्षा बलों द्वारा किसी आतंकवाद विरोधी अभियान का लाइव कवरेज हो, जिसमें मीडिया कवरेज को उचित सरकार द्वारा नामित अधिकारी द्वारा समय-समय पर ब्रीफिंग तक सीमित रखा जाएगा, जब तक कि ऐसा अभियान समाप्त न हो जाए। ऐसा प्रसारण केबल टेलीविजन नेटवर्क (संशोधन) नियम, 2021 का उल्लंघन है और इसके तहत कार्रवाई की जा सकती है। इसलिए, सभी टीवी चैनलों को सलाह दी जाती है कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में सुरक्षा बलों द्वारा आतंकवाद विरोधी अभियान और आंदोलन का सीधा प्रसारण न करें। मीडिया कवरेज को ऐसे ऑपरेशन के समाप्त होने तक उपयुक्त सरकार द्वारा नामित अधिकारी द्वारा आवधिक ब्रीफिंग तक सीमित रखा जा सकता है।

सभी हितधारकों से अनुरोध है कि वे राष्ट्र की सेवा में उच्चतम मानकों को बनाए रखते हुए कवरेज में सतर्कता, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का प्रयोग करना जारी रखें।

जम्मू-कश्मीर के इस इलाके में भालुओं का आतंक, 1 को पकड़ा

अनंतनाग। अनंतनाग जिले के श्रीगुफवारा बिजबेहरा में एक भालू देखा गया है। स्थानीय लोगों ने वन्यजीव विभाग और पुलिस को सूचना दी, जिन्होंने मौके पर पहुंचकर भालू को पकड़ लिया। वन्यजीव विभाग ने इस भालू को अपने वाहन में कैद कर लिया और उसे दक्सुम कोकरनाग के वन्यजीव क्षेत्र में छोड़ दिया। स्थानीय लोगों ने विभाग से अपील की कि श्रीगुफवारा में भी एक नियंत्रण कक्ष स्थापित किया जाना चाहिए क्योंकि हमारा क्षेत्र जंगलों के बहुत करीब है और जंगली जानवर हमेशा श्रीगुफवारा और आस-पास के इलाकों में घूमते रहते हैं।

पुस्तक का वितरण, के साथ साथ जिलाधिकारी ने किया स्कूलों का निरीक्षण

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। विद्यालयों में बच्चों का नामांकन शतप्रतिशत कराने को लेकर जिलाधिकारी डॉ.दिनेश चंद्र ने विकासखंड धमार्पुर के पूर्व माध्यमिक विद्यालय गजना में पाठ्य पुस्तक का वितरण किया। कुल नामांकित 134 छात्रों के सापेक्ष 101 छात्र मौके पर उपस्थित पाए गए। गत तीन कार्य दिवसों में मध्यान भोजन की लाभार्थी छात्र संख्या क्रमशः 75, 73 एवं 74 पाई गई। बरसात के उपरांत संचारी रोग के दृष्टिगत जिलाधिकारी ने विद्यालयों में विशेष साफ सफाई रखने के निर्देश भी दिए। इसी के साथ उन्होंने छात्रों को भी मच्छर जनित रोगों के प्रति जागरूक करने एवं रोगों से बचाव के उपायों की जानकारी को साझा करने के निर्देश दिया। इसके अलावा उन्होंने विद्यालयों के अध्यापकों से शिक्षक अभिभावक बैठकों के दौरान बच्चों को नियमित स्कूल भेजने, संचारी रोगों के प्रति जागरूक करने के लिए प्रेरित करने के निर्देश दिए। इस दौरान नवागत मुख्य विकास अधिकारी ध्रुव खाडिया, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉक्टर गोरखनाथ पटेल आदि उपस्थित रहे। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा विकासखंड धमार्पुर के कंपोजिट विद्यालय पहटिया एवं विकासखंड मुफ्तीगंज के प्राथमिक विद्यालय रसूलपुर ओझइयिां का आकस्मिक निरीक्षण करते हुए जनपद के बेसिक शिक्षा का हाल जाना गया। विद्यालय की दीवाल पर कंपोजिट धनराशि के व्यय का विवरण शैक्षिक सत्र 2021-22 के बाद से अंकित नहीं पाया गया। विद्यालय में निर्मित मध्यान भोजन को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉक्टर गोरखनाथ पटेल द्वारा चखते हुए भोजन की गुणवत्ता का परीक्षण किया गया। विद्यालय प्रांगण साफ सुथरा न पाए जाने पर मुख्य विकास अधिकारी द्वारा पूछे जाने पर विद्यालय द्वारा बताया गया कि विद्यालय में सफाई कर्मी साफ सफाई हेतु कभी नहीं आते हैं।

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given that under instructions of my clients I am investigating the title with regard to flat no. 101 on the first floor admeasuring about 914 sq.ft carpet area and a balcony on the 1st floor of the building known as Sethi Niwas, bearing Cadastral Survey No. 738 A/10 of Matunga Division, Plot No. 523-A, R. P. Masani Road Matunga (CR), Mumbai - 400019, of Mr. Vijay Chheda with One Open Car Parking Space and 31% Share in Ownership right of the plot situated at Matunga CR bearing Cadastral Survey No. 738 A/10, Plot No. 523-A of Matunga Division in the Registration District of Mumbai City (Hereinafter referred to as the said Flat)

Any and all persons/entities including any bank and/or financial institution having any share, right, title, benefit, interest, claim, objection and/or demand etc. in respect of the said Flat or any part thereof by way of sale, transfer, exchange, let, lease, sub-lease, license, leave and license care taker basis, tenancy, sub-tenancy, assignment, release, relinquishment, mortgage, inheritance, bequest, succession, gift, lien, charge, maintenance, easement, trust, occupation, possession, family arrangement settlement, litigation or any other method through any allotment, agreement, deed, document, writing, decree or order of any Court of Law, notice of lis-pendens, contracts, agreements, pledge, lien, development rights, or encumbrance or otherwise of whatsoever nature, are hereby required to make the same known in writing, along with documentary evidence in support thereof to the undersigned at the address mentioned below within **15 (Fifteen) days** from the date of the publication of this public notice failing which the claim shall be deemed to have been waived or abandoned.

Date : 25.04.2025

Sd/-
SOMNATH J. SAHU
ADVOCATE & NOTARY
Legal India, Shop No. 6, Elphinstone House, Gr. Flr., Adi Murzban Road, Fort, Mumbai - 400001

TSMH
त्रिभुवन सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल

डा0 जयेश सिंह
एम.बी.बी.एस. एम.डी.
पीडियाट्रिक्स
डी.एम. नियोनेटोलॉजी
(Fernandez Hospital, Hyderabad)
DASSI (KEM Pune)
ONTOP (AIIMS New Delhi)

डा0 स्पृहा सिंह
M.B.B.S., MD (Pt. JNM Raipur)
CCEBDM (Diabeties)
जनरल फिजिशियन एवं मधुरोग
विशेषज्ञ पूर्व चिकित्सक आपोलो हॉस्पिटल, हैदराबाद

वयस्कों में हार्ट, किडनी, शुगर, पेट रोग लकवा
पैरालाइसिस, निमोनिया, लीवर,
डेंगू, मलेरिया, टाईफाइड, अस्थमा/दमा, हाईब्लड प्रेशर
मलेरिया, डायलसिस, सिजेरियन डिलिवरी, नसों में शून्यपन
मस्तिष्क ज्वर, पीलिया, हेपेटाईटिस बी.,
ल्यूकोरिया, खूनी पेचिस, सर दर्द, माइग्रेन, यूरिन इन्फेक्शन
स्वास व फेफड़ा रोग व अन्य सभी रोगों का इलाज किया जाता है।

आयुष्मान कार्ड द्वारा नवजात शिशु, बच्चों एवं व्यस्को का निःशुल्क इलाज।
पूर्वांचल के एक मात्र सुपरस्पेसिलिस्ट नवजात शिशु रोग विशेषज्ञ

पता- दिवानी कचहरी, अम्बेडकर तिराहा, जौनपुर | 05452-356274, 7992031213, 9026551423 | YouTube @TribhuvanSinghMemorialHospital